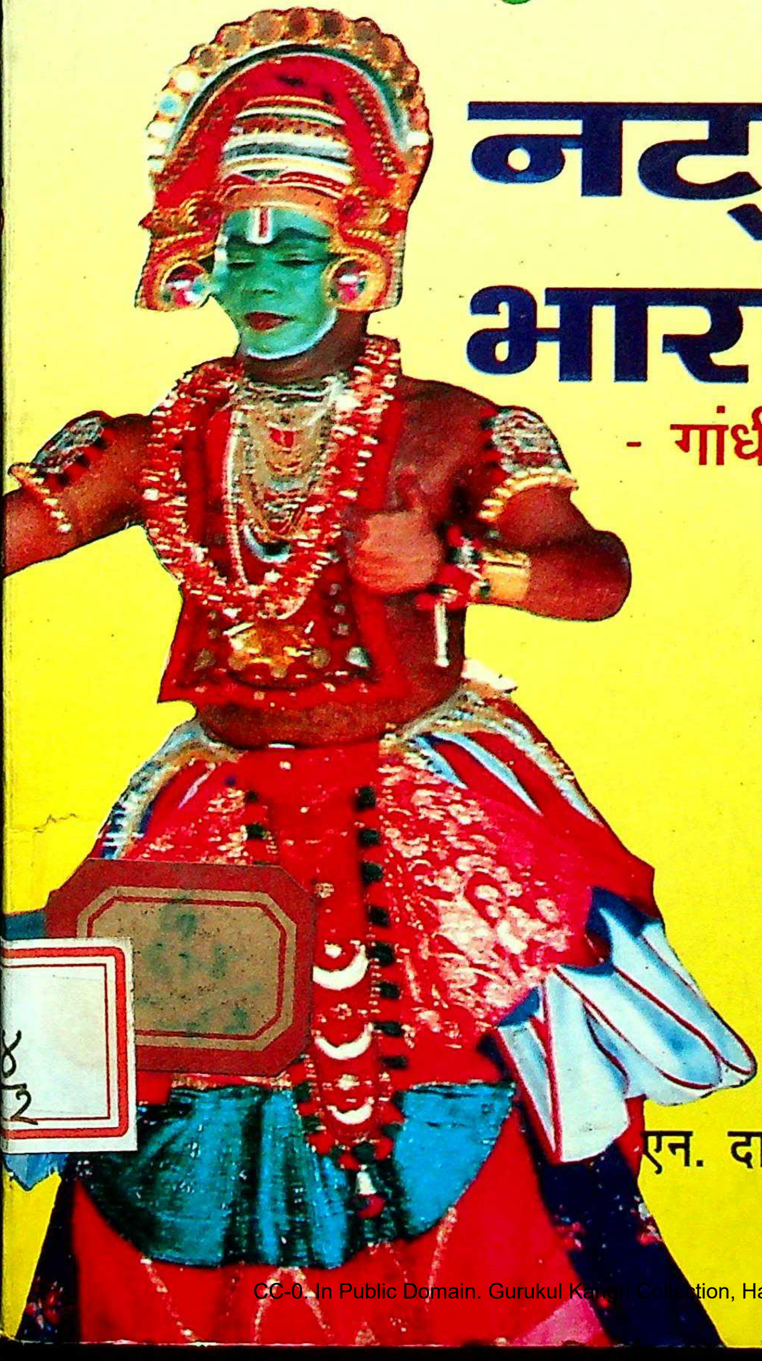
50

नट्न भारति

- गांधी गाथा



एन. दामोदर कुरूप

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या.........

आगत संख्या 102717

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३०वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

नट्न भारति

–गांधी गाथा

एन. दामोदर कुरूप

गांधी स्मृति एवम् दर्शन समिति

नई दिल्ली

मूल्य : 75/-

मुद्रक :
महालक्ष्मी प्रिंटर्स
न्यू उस्मानपुर, शाहदरा,
दिल्ली।

विषय-सूची

पहला अध्याय

अध्याय दूसरा

तीसरा अध्याय

चौथा अध्याय

पांचवां अध्याय

छठा अध्याय

सातवां अध्याय

प्राक्कथन

भारत एक सांस्कृतिक सम्पदा से परिपूर्ण प्राचीन राष्ट्र है। इस धरती पर अनेकों ऐसे महान व्यक्तियों का जन्म हुआ जिन्होंने हमारी संस्कृति, इतिहास एवं परम्परा को अपने कृत से गरिमा प्रदान किया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी हमारे इतिहास के युग पुरुष हैं जिनके व्यक्तित्व में भारत का अतीत, उसकी परम्परा और संस्कृति अपनी समस्त संचित शक्ति को लेकर आ मिली थी।

सदियों से हमारी इस सांझी विरासत को कला एवं साहित्य की विभिन्न विधाओं के माध्यम से जीवित रखा है हमारे साहित्यकारों एवं कलाकारों ने। मर्यादा पुरुषोत्तम राम, युगावतार कृष्ण और पौराणिक एवं ऐतिहासिक वीरों की गाथा आज भी जीवित है जनमानस के हृदय में इसी श्रद्धा के बल पर। हमारी सदी के युग पुरुष थे महात्मा गांधी जिनका जीवन एक महाकाव्य है, जो मानवता को सत्य, अंहिसा और करुणा का अमर संदेश प्रदान करता है।

महात्मा गांधी पर विश्व में शायद सबसे अधिक पुस्तकें लिखी गईं है। गांधी वह युगपुरुष हैं जो प्रदेशिक और प्रान्तीयता, देश और काल के बंधन से सर्वथा मुक्त हैं। साहित्यिक परिपाटी की इसी शृंखला की एक कढ़ी है केरलीय विद्वान श्री एन. दामोदर कुरुप की यह रचना 'नट्न भारति'। इस रचना की विशेषता है कि यह एक अहिंदी भाषी लेखक की हिन्दी साहित्य को सशक्त देन है। दक्षिण भारत में हिन्दी भाषा का प्रचार गांधी जी के रचनात्मक कार्याक्रमों का अभिन्न अंग था। उस दिशा में यह प्रयास निश्चय ही प्रशंसनीय है।

भारत की आज़ादी की पचासवीं वर्षगांठ एवं महात्मा गांधी के महाबलिदान की अर्धशती पर श्री एन. दामोदर की श्रद्धांजलि स्वरूप रचित इस महाकाव्य को मैं महात्मा गांधी के राष्ट्रस्मारक गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति की ओर से पाठकों को विनम्र भेंट करता हूं।

15 अगस्त 1997

बिशम्भरनाथ पांडे
उपाध्यक्ष
गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति
नई दिल्ली।

एक प्रशंसनीय प्रयास

श्रीयुत एन. दामोदर कुरुप केरलीय भाषा के एक देशाभिमानी विद्वान! हैं। उन्हें देखकर यह अनुमान लगाना भी कठिन है कि यह **दुबला पतला व्यक्ति देश विदेश की इतनी भाषाओं पर अधिकार** रखता है।

श्री कुरुप उस युग की देन हैं जब देश के युवकों के सामने सरलता, त्याग व परहित कष्ट सहन करना ही जीवन की सफलता की सार्थकता की कसौटी माना जाता था। आपने दक्षिण भारत में राष्ट्रभाषा के प्रसार के लिये ठोस कार्य किया है। हिन्दी में भी गद्य पद्य लिखने में आपकी रुचि है। आपने कई वर्ष लगाकर गांधी जी पर काव्य ग्रंथ रचा है। कई शैलियों में पद्य रचना भी की है।

इसमें तमिल और मलयालम के साहित्य की भी स्पष्ट छाप है। मेरी दृष्टि में हिन्दी की समृद्धि व राष्ट्रीय गौरव के लिये यह आवश्यक है। यह एक नन्दनीय प्रयास है। गोरे शासकों ने भारत में फूट पैदा करने के लिये भाषा भेद उत्पन्न करके एक भाषा को दूसरी से दूर किया। श्री कुरुप का प्रयास इससे विपरीत है। वह देश को, हृदयों को, भाषाओं को व प्रदेशों को जोड़ने व निकट लाने वाले साधक हैं।

इस काव्य में स्वदेशी, हिन्दी, मद्य-निषेद्य, शिक्षा, दलितोद्धार, खादी, सभ्यता आदि पर बहुत विचारोत्तेजक व हृदय स्पर्शी रीति से लिखा गया है।

मैं यह मानता हूं कि इस काव्य में छंद शास्त्र के मर्मज्ञ को कई दोष दिखाई देंगे परन्तु कवि ने किसका बंधन स्वीकार किया है ? क्या महात्मा कबीर, नानक, मीरा आदि ने शास्त्र को पढ़कर अपने गीत रचे थे ? क्या साहित्यकारों ने उन्हें कवि नहीं माना ? कुछ लोगों को इसमें प्रचलित शब्द-प्रयोग में कुछ नवीनता व न्यारापन लगेगा। स्मरण

रखिए। श्री कुरुप दक्षिण भारतीय हैं। एक गम्भीर विद्वान् हैं। उनकी हिन्दी–सेवा किसी से कम नहीं। उन्हें अपनी केरलीय शैली में हिन्दी बोलने व लिखने का पूरा अधिकार है। भोजपुरी, अवधी, ब्रजभाषा आदि हिन्दी हैं तो केरलीय हिन्दी भी विशुद्ध हिन्दी है। मैं इसका स्वागत करता हूं। श्री कुरुप की तड़प व साधना का अभिनन्दन करता हूं। समस्त हिन्दी प्रेमी इस साधना पर अभिमान करेंगे। ऐसा मुझे विश्वास है।

राजेन्द्र 'जिज्ञासु'
24.2.1995 महर्षि दयानन्द भवन
चेंगन्नूर

दो शब्द

सन् 1989 मार्च महीने में केरल के कोट्टयम् नामक नगर में केरल हिन्दी प्रचार सभा का पाठ्यक्रम परिष्करण समारोह सम्पन्न हुआ था। दो हफते के उस कार्यक्रम में भाग लेने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त था। उसमें श्री के० जि० बालकृष्ण पिल्लैजी, जो केरल ज्योति के सम्पादक एवं सभा के प्रमुख कार्यकर्त्ता भी है, भाषण दे रहे थे। प्रसंगवश उन्होंने प्रचारकों से प्रश्नकिया कि "आप सभा के प्रमुख कार्य कर्त्ता हैं, पर कोई कविता लिखने का परिश्रम क्यों नहीं करते ?" किसी ने उसका जवाब नहीं दिया। मुझे वह एक चुनौती सी लगी। मैंने कहा "देखा जाएगा"। उसी दिन रात करीब 12 बजे कविता लिखने बैठा। कविता रचना के शुभ परिणाम के लिए मैंने इष्टदेव की प्रार्थना की। वही "नतमस्तक हूं" नाम से प्रारम्भ पृष्ठ में दिखाई पड़ता है। दूसरे दिन मैंने उसे खुली सभा में सुनाया था। उस समय केरल विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष श्री के० कृष्णन नप्पूतिरिजी भी उपस्थित थे। कविता सुनते ही उन्होंने कहा "अरे तुम्हें कवित्त्व शक्ति है तुम लिखते जाओ, कविता अच्छी है"। मैं मंत्र मुग्ध हुआ, लिखने लगा दूसरे दिन रात लिखने बैठा तो कई प्रश्न एक साथ मन में आ धमके। किसके बारे में लिखूं और क्या लिखूं ? तुरन्त मैंने निश्चय किया कि इस युग के सबसे बड़े आदमी के बारे में लिखना चाहिए। वह तो हमारे पूज्य बापूजी हैं और सबसे महान घटना भी याद आ गयी वह है भारत की आज़ादी इस प्रकार कथावस्तु और कथानायक दोनों आ गये। फिर भी कई आवश्यक बातें याद आ गयी। भारतीय काव्य साहित्यिक परम्परा, नवीनता, तत्कालीन सामाजिक आवश्यकताएं, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनैतिक दृष्टिकोण, काव्य लक्षण आदि विषयों पर भी सोच-विचार करने की आवश्यकता आ गयी। सर्वोपरि भारतीय साहित्य की एकता पर भी विचार करना था।

भारतीय काव्य साहित्यिक परम्परा अथाह सागर है। उसमें बाल्मीकि, व्यास, कालिदास, भवभूमि, महाकवि चन्दवरदाई, सूर, तुलसी, कबीर, केशवदास आदि महान कविगण मत्स्य डुबकी लेते हैं और समस्त जलराशी का मंथन करते हैं उनके बीच में मुख दिखाने की योग्यता मुझ नगण्य को नहीं है, फिर भी उनकी याद बनाये रखने के लिए दो एक दोहे और चौपाई, संस्कृत के कुछ वर्णवृंत्र छंद भी इस तुल्लल साहित्य के साथ मिला दिये गये। नवीनता के लिए केरल के ओहण तुल्लल की कविता शैली लगायी। बापूजी के जीवन और कार्यक्रमों से तत्कालीन सामाजिक अवस्था के प्रकरण लिए गए। इतना ही नहीं इनका जीवन ही सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनैतिक दृष्टिकोण से ओतप्रोत है। इसलिए इन विषयों की चर्चा करने में कोई कठिनाई नहीं थी। काव्य लक्षण की चर्चा यहां शायद ही सम्भव होगा। इसलिए की वह ''व्याख्यान वेति न कवि'' कहकर छोड़ देता हूं। क्योंकि स्वपन्न लोक जगाने में तुल्लल साहित्य का स्थान क्या है ? उसका निर्णय आलोचक और व्याख्याता करेंगे।

साहित्यिक एकता और भाषावाद

भाषावाद आज का प्रमुख चर्चा विषय है कि भाषावाद अलगाववाद तक ले जाता है। यह मानी हुई बात है कि भारत में सांस्कृतिक एकता है, साथ–साथ यह भी कहा करते हैं कि भाषाओं में भिन्नता होती है। यह वैख्ध्यात्मक भावना है। वास्तव में भारत की सभी भाषाओं का कुल एक ही है। किसी पश्चिमी विद्वान् ने (डॉ० ग्रियेर्सन महोदय) हिन्दी भाषा और लिपि नामक ग्रंथ में लिखा है कि उत्तर भारत में बोली जाने वाली हिन्दी मराठी, गुजराती, बंगला आदि भाषाएं भारत यूरोपीय या आर्य कुल की भाषाएं हैं और दक्षिण भारत की तमिल, मलयालम, कन्नड़ा और तेलुगू द्राविड कुल की है। यह बिलकुल निर्मूल है। यह भाषा संबंधी अलगाववाद की जड़ है। (1) उदाहरण के लिए संस्कृत, हिन्दी आदि भाषाओं में 'अ' से लेकर 'औ' तक के स्वर वर्गों

का उच्चारण जिस प्रकार है उसी प्रकार दक्षिण की भाषाओं में भी है। इनमें लिपियों की आकृति का भेद मात्र है। उच्चारण एक ही प्रकार है। (2) संस्कृत और हिन्दी में व्यंजन अक्षरों का जैसा उच्चारण है वैसा दक्षिण की भाषाओं का भी है। फ, ङ, च, ञ, ट, ण, त, न, प, म, य, र, ल, व आदि व्यंजन वर्णों का उच्चारण तमिल और संस्कृत में समान है। तमिल में लिपियों की संख्या कम है और साथ–साथ आकृति भेद है। इन व्यंजन वर्गों के उच्चारण में कोई भेद नहीं है। (3) इन्हीं कारणों से हिन्दी के प्राय सभी पद्य तमिल और मलयालम में भी लिख सकते उसी प्रकार तमिल और मलयालम के प्राय सभी कविताएं हिन्दी में लिख सकते हैं। संस्कृत के तद्भव और तत्सम शब्द सर्वत्र इिखाई पड़ते हैं। अतः यह निर्विवाद रूप से माना जा सकता है कि उत्तर और दक्षिण की भाषाओं का कुल एक ही है। स्वर और व्यंजन के उच्चारण की एकता संसार की किसी अन्य भाषाओं में नहीं हैं। इस तथ्य को व्यक्त करने के लिए तमिल भाषा के दो एक पद्य भी इस ग्रंथ में लिखे गये हैं। संक्षिप्त में यह सिद्ध होता है कि भारतीय भाषाओं का मूल एक है।

तुल्लल साहित्य

इस कविता शैली का प्रारम्भ प्रवर्तक एवं परमाचार्य कलक्कत्तु कुञ्ञन नय्यर थे। वे अठारहवीं शताब्दी में जीवित थे। वे राजाश्रयी कवि थे, पर राजा रंक सबकी आलोचना करते थे। इसलिए इस कविता शैली की विशेषता यह है कि इसमें सबकी आलोचना की जा सकती है। अतः इसमें भी स्वाभाविकतया इधर उधर ऐसे प्रसंग आये होंगे। उन्हें आलोचक, नर्तक, श्रोता, पादक, दर्शक व्याख्याता सब क्षमा करें। इतना कहकर इस छोटा नटन काव्य को भारतीय समाज के सामने अर्पण करता हूँ।

तुल्लल का अवतरण

तुल्लल तीन प्रकार के होते हैं। (1) ओट्टन तुल्लल, (2) परयन तुल्लल, (3) शीतङ्कन तुल्लल। इसके लिए आकर्षक वेषभूषा, मुकुट या किरीट, पैर में घुंघरू सारे मुख में हरा रंग चढ़ाकर शोभायमान कर देते हैं। इसके अवतरण के लिए साधारणतया तीन आदमी अवश्य चाहिएं—(1) गायक—नर्तक (2) घंटी बजाने वाला (3) मृदंग बजाने वाला। गायक और नर्तक एक ही आदमी है। वह गाते हुए नटन करेगा घंटी बजाने वाला गायक का गाना दुहराता है। यह ताल प्रधान है और न छंद प्रधान। कहीं—कहीं शिखरिणी छंद आ जाता है। गायक का गाने का अर्थ ओग्य या मुद्राओं द्वारा व्यक्त करना पड़ता है। प्रारम्भ में इस कला का अवतरण देव मंदिरों में ही होता था। अतः इसका आरम्भ देवों की स्तुति के साथ होता है। लेकिन अब उसका अवतरण अन्य वेदियों में भी हुआ करता है, पर स्तुतियां अवश्य होती हैं। अभी तक इस कलाविशेष का कार्य क्षेत्र केरला भाषा—भाषियों में था। अब वह केरल की सीमा पार कर हिन्दी के क्षेत्र में प्रवेश करता है। यह ग्रंथ ''नटन भारति'' उसका अग्रदूत होगा। मेरा विश्वास है कि हिन्दी भाषा—भाषी सज्जन उसका सहर्ष स्वागत करेंगे।

लेखक
एन० दामोदर कुरुप

सहायक ग्रंथ :

इस काव्य के गढन के लिए निम्नलिखित ग्रंथों से सहायता ली गयी है।

1. गांधीजी की आत्मकथा
2. रामायण
3. महाभारत
4. श्रीमद्भागवत
5. सत्यार्थ प्रकाश (ऋषिदयानन्द)
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास (आचार्य रामचन्द्रशुक्ल)
7. ऋग्वेद् भाष्य (ऋषिदयानन्द)
8. अमरकोष
9. संसार का इतिहास (एम० एस० मजूमदार)
10. मेन केम्फ (अडोल्फ हिटलर)
11. भारत युद्ध (सुभाष चन्द्रबोस)
12. एड मेंड बर्क (बर्क के प्रभाषण)
13. ईशावास्य उपनिषद्
14. काठकोपनिषद्
15. डिस्कवरि ऑफ इंडिया (पं० जवाहर लाल नेहरू)
16. मोक्षसाधन बिलक्कम् (निश्चल रामानंद)
17. नेञ्चरिविलक्कम् (पट्टिणत्तुपिल्लै–तमिल)

18. अष्टांग हृदयम्
19. गीता रहस्य (लोकमान्य बालगंगाधर तिलक)
20. कुञ्चन नप्यार (ओट्टन तुल्लल काव्य शैली का परमाचार्य–मलयालम्)
21. अरुण गिरिनाथ का तिरूप्पुकष–तमिल
22. रामचरितमानस (तुलसी साहित्य–तुलसीदास)
23. हठयोग प्रदीपिका
24. पृथ्वीराज रासो (चन्दरवरदाई)

अध्याय एक

नतमस्तक हूं

जिसकी अगणित जटिल जटा में
तारे पल पल प्रकट रहे हैं
जिसका विमल मुखाम्बुज उससे
तेजोमय हो रञ्जित रहता,
जिसके भुजंग विभूषण होते
सुरसरि सिर पर कलरव करती,
उस करुणामय शिव के पद पर
नतमस्तक हूं, नतमस्तक हूं।
गुरुजन, पुरजन गिरिकूटों के,
गिरिजन, हरिजन सुने कृपया,
टूटी फूटी कविता पढ़ के
मुझ पर कंकड फेंक न पावे।
हिन्दी होती मधुर तरंगिणि
नवभारत की मधुमय वंदनी,
उसमें डुबुकी लेने मुझमें,
बिलकुल शब्द समूह नहीं है।
वैदिक, लौकिक, प्राकृत वाली,
अरबी, फारसी, आंगल, उनमें,
जो जो मानस पट में चमकें,
उन्हें जुट जुट लिखता जाऊं।
जैसे मेंढक गिरिपर चढ़ते,
मोहित होकर उछला करते,
वैसे मैं भी लालायित हो,

हिन्दी कविता लिखने लगता।
कविकुल जननी वीणा धारिणि,
मेरी तुतली बोली सुनलें,
हर्षित पुलकित होकर मुझ में
आशिष बरसे, वर दें, सुख दें।

❖ ❖

झांकी

तो मैं कहता एक कहानी,
भारत मां के वीर सुनों तुम,
जिन वीरों ने जान गंवाये,
आज़ादी को अमर बनाया,
उनके पदरज सिर पर धरता
अमर कहानी कहता सुनता।
अतलान्तिक के पुरबी तट से,
गोरे भारत पहुंच रहे थे,
वाणिज करके धन उपजाना
उनका पहना ध्येय रहा था।
वणिकों ने जब देख लिया तो
भारत जग का परदीसा है।
थल के जल के वैभवों ने,
उन लोगों में था लोभ बढ़ाया
झांक रहे थे सोच रहे थे,
इसकी महिमा अनत नहीं है।
गिरि शिखरों से बहती नदियां,
तरुनिकरों में गाती चिड़ियां,

कटक तटों के निबिड वनों में,
अज, गज, मृग कुल विचर रहे हैं।
हरिन वनों में फल फूलों से,
मंडित तरु दल झूम रहे हैं,
मोती मरनक माणिक मूँगा
वैडूयीदि पडे है कहीं कहीं
वनविभवों का भण्डार घर है,
जलविभवों का पारावार है,
वरदात्री है सबविधि भुवि यह
पर देशी को परदीसा था।
सूरज भगवान होता इनका
बरुण मरुत् वैश्वानर सबमें
देवीभाव मनाया जाना
प्रणमित होने अरुणोदय में।
गोरों ने तो सोचा इसको,
लूट लगाकर थाक जमायें,
जर्जर सर्प शवों का भक्षक,
गृध्र छत्रों में श्वेत मराली।
जनता होती भोली भाली,
सबका स्वागत करने वाली,
देश बंटे हैं छोटे मोटे
आपस में नित लड़ने भिड़ने।
जो भू–भाग रहा सदा सुकृत का सद्भाव का सत्य का,
आभा से निज ज्ञान की भुवन को 'देना सिखा सभ्यता',
सो भी आज शिकार है, बधिक का विध्वंसकारी यथा,
दुर्भूतादि रुचें सदा रुधिर को नैवेद्य को न कभी।

❖ ❖

कम्पनि

पूर्वी देश समुच्चय अपने
करगत करके लूट लगाने,
पूर्वी भारत कम्पनि आयी,
परधन हारी चरित्र विहीना।
भारत देशी नृपति गणों में,
द्वेष बढाया युद्ध छिटाया,
दोषारोपण उन पर करके,
लडवाते थे लाभ उठाते।
शत्रु किसी का मित्र किसी का,
सन्धि किसी से विग्रह क्षण में,
अवसर पाकर सबसे मिलते,
वैर बढाये हट कर छिपते।
राजघरों में पुर नगरों में,
गलियों में और कानन पथ में,
जल थल सब कहीं परदेशों का
भीषण ताण्डव होने लगता।
अंधा धुंधा नियम बनाये,
राजाओं को पदच्युत करने,
झाँसी वाली रानी ने यों
छलका घोर विरोध किया था।
उसने नंगे खडग घुमाये,
परदेशी को ललकारा था,
आगे पीठे देयें बाये
पैंतर बदली खड्ग घुमाया।
गरज रही यों अपने पुरखे,
नरवीरों का लीलास्थल है,

"लड़ सकती और मर भी सकती,
अपनी झाँसी छोड न सकती"
ध्वनियां शत शत तलवारों की,
नभमंडल को कम्पित करती,
मानो बहुशत चन्द्रकलाएं,
मिलकर नभ में ताण्डव करती।
शत शत गोरे खेत रहे बहु–
शत विक्षत हो तडप रहे थे,
भारत रमणी वीर बधूही,
रण चण्डी सी दीख पडी थी।
अतुलिन भीकर दृश्यदि खाये,
कर बल का निज पाचंय देती,
गोरों को नव पाठ पढ़ाती,
छोड़ चली जड़ लोक सुरों के।
कर्णाटक मद्रास मराठे,
वंग कलंग व अवध व सिंधी,
आपस में थे लडते मरने,
ज्यों पतझड के पत्ते झरने।
कर्णाटक की रण वेदी में
परदेशी का कौशल रज का।
कतिपय नृपगण निहसंगी से
मानो नाटक देख रहे थे।
टिप्पू सुलतान वीर प्रतापी,
दक्षिण देशी ध्रुवतारा थे,
केरल देश के रक्षक कहते,
उन पर गोरे टूट पडे थे।
रक्षा के मिस वेतन पाने,
लाखों रुपये कर सालाना,

टिप्पू का जब पतन हुआ था,
सारे क्षणिण देश गिरे थे।
उत्कोचों से मीर जाफर को,
लोभ दिखाया मोह बढाया,
उद्दौला का निधन हुआ तो,
मिरिजा को भी मार गिराया।
अवध नवाबी वाराणसि अरु
जोधपुरी का पतन हुआ था,
मारवार, संधि पेशवाई अरु
पंजाबी भी थकित बने थे।
रञ्जितसिंह महारथ राजा,
वीरों के सिर मौर रहे थे,
उनसे गोरे डरकर छिपने,
मानो वृक से बकरे डरते।
उनका निधन हुआ तो गोरे,
धीरज बांधे मुख दिखलाते,
मौका पाकर हड़प लिया था,
उत्तर पश्चिम भारत भुविको।
कितने पानीपत हुए थे।
प्लासी कितनी बार हुई थी।
इनने पर भी भारत वासी,
मिलकर लडना भूल गये थे।
वीर महारथी उद्दौला का
अन्त हुआ था प्लासी रण में,
पषराशी, पाण्ड्य, वेलुत्तम्पी
पिप्पू दलपति पतित हुए थे।
वीर मराठा पेशवा, चेनसिंह,
शाहे आलम बहादुर सबमें,

सिखों के नृप परम प्रतापी,
विघटित होकर लडने मरने।
मुगलों की अपराजित गद्दी,
दुर्बल होकर डाले रही तो
सामंतों में धैर्य बढा था
तानाशाही स्वाभाविक था।
कोई राजा कामातुर हो
कामिनियों के पीछे पडने
दूसरे अपना शान दिखाने
भाई पर भी टूट पडे थे।
परदेशी को मित्र बनाये,
जिसने अपना शान बढाया
उनको सालाना कर देकर
गद्दी मोलकर लेना पडता।
जैसे अजगर मृग शाबक को
धीरे धीरे निगला करता,
वैसे गोरे हिन्दुस्तान को
अपने करगत करने लगते।
राजघरों में लूट लगाने
राजकोश तुडवानेलगने
गलियां आग लगलगाई जाती
सनियां अपमानित हो जाती।
पुर नारीजन लाज बचाने,
हाहाकार मचाया करती,
दावानल की ज्वाला जैसी,
विषमय भ्रान्ति मचायी जाती।
चोरी का धन जल यानों में,
पश्चिम की ओर बहता रहता,

रतन बहे थे कनक बहा था,
उाम खनिज पदारथ बहते।
निस्तुल मणिगण भूषण बहने,
अद्भुन संस्कृत ग्रंथ बहे थे,
पशुकुल बहने खगकुल बहने,
थल जल विभव सभी बहने थे।
चोरी की यह गत्तिविधियों शत–
शत सदियों से चलती रहती,
उसका वर्णन सम्भव है नहीं,
नदपि कहूंगा कतिपय सुनिये।
हूण पहूंचे लूट लगाने,
शक दल उनके साथ पहुंचे
हतया निर्मम धंधा जिनका
उनको भाता बर्बर लीला।
मंगोलों ने लूट लगाया,
पारसियों ने डाक डाला,
सिंहासन को हडप लिया था
सुन्दर नील मयूर समाना।
अरबों ने था लूट लगाया,
अपना स्वत बढाया सुख से,
अफगानों ने लूट लगाई,
तुर्कों ने भी लाभ उठाया।
उनको देखा देखी गोरे–
शोषक शोषण करते रहते,
हिन्दुस्तान का द्वार खुला था,
परदेशों को गजब दिखाने।
भाव बदलते वेष बदलते,
परेदशी नित इकट्ठे होने,

कोई कहते धर्म सिखाने,
सभ्य बनाने निकले कोई।
सबके सब है शोषक रहते,
धन का सञ्चय ध्येय सभी का,
मरकर गीदड सडने पर भी,
मुर्गी पर जिन दृष्टि रहेगी।
देशी नृपगण रण दीक्षित थे,
बीरों के शृंगार रहे थे,
एकीभाव न जानते थे वे
भ्रातृर्भाव न रखते मन में।
यदि वे नरपति मिलकर लडते
गोरे कोई बच नहीं पाते,
एकात्मकता भारत गण की
जान समझो भाई बहिनो।
भारत के जिन यतिवर्यों ने,
सारे जग को सभ्य बनाया,
अश्वों को सजधज कर भेजा,
अश्वमेघ के यज्ञ चलाये।
राजसूय से शक्ति बढाये,
राज धर्म को अचल बनाया,
उनके वंशज परदेशी के,
हाथों से पद दलित बने है।
जिस भारत ने सारे जग को,
शिक्षा देरक सभ्य बनाया,
सामंतों को दीक्षित करके,
साम दाम चहुँ नीति सिखाई।
जिसने पाशुपदास्त्र बनाया,
आग्नेयाशस्त्र बनाया जिसने,

वायव वारुण ब्रहमास्त्रों को,
जिसने वायव यान बनाये,
भूमण्डल में भ्रमण किया था,
उनके वंशज परदेशी थे,
हाथों से पददलित बने है।
जिसने तप से शक्ति बढाये,
ग्रहगोलों की गतिविधियों को,
मानस द्दग से गिन गिन निस्तुल
ज्योतिषकावरदान दिया था
जिसने आयुर्वेद सिखाया,
आयस, तात्र सुवर्णदिक का
सदुपयोग सिखाया नरको
निस्तुल कर्म पहुत्व सिखाया
जिसने छत्र छाया में निज,
अभय दिया था मानवता को,
उसकी जनतति परदेशों के,
हाथों से पददलित बनी है।
निखिल जब बोल उठे खो गया देश है,
पददलित हो गये, रिपुगण भये यहां,
विपुलतर भयनिमिर सब कही छा गया,
जन निवह त्राहीनि, कुहराम मचा रहा,
रसद नहीं बसब नहीं, क्षुधित जन मर रहे,
भरण नहीं मरण है पतित ढंग राज में,
विषधर कि निशिचर कि दूत जम राज के
छल कपट बञ्चना से राज कर रहे
पटुनर दबाव है, विकृत सित राज में,
रण निपुण नृपतिगण अब नहीं है यहां
भरत भुमि सब तरह विषम बनती रही,

विकट विधि कृत गानि कि सुकृतत बिनु मिट रही।
आये़ गौरे यहां थे वणिक बन महीपालकों की दया से,
सेना से दासंता से छलकपट तथा यंत्रणा मंत्रणा से,
पाये थे वे स्वमोह प्रशमन सुविधा विश्ववितापहारा,
धीरे धीरे नृपों के पद हडप रहे पातकी आननायी।

❖ ❖

आलोचना

बोले गोरे भारतवासी,
सभ्य न होते प्रगति न जानते,
झूठे धर्म पर विश्वास करते,
सत्य न जानते जुगति न जानते।
धर्म पर लडते जान पऱ लडते,
रंत्र पर लडते प्रान्न पर लडते,
आन पर लडते शान पर लडते,
भाषाओं पर लडते ही है।
रंग रहा है काला इनका,
संघ बने है जातिविधान पर,
सूरज की ये पूजा करते,
वारान्निधि भी भगवान होता।
पेड़ों पौधों नागों को भी,
ये जन पूजा करते रहने,
खग, मृग, मीन, हवा का इनके
मन में स्थान सदापि रहा है।
आधे नंगे फकीर होने,
इनके गुरुजन काननवासी,

राजा रंग सभी पैरों पर,
इनके प्रणमिन होते ही है।
गंदी कुटियों में रहकर ये,
चर्चाओं पर ध्यान न देने,
शुद्धाशुद्ध विचार न करते,
वृद्ध जनोचित चिन्तन सबके।
आमिष भोजन पाप कहाने
शाकाहार को उत्तम कहते,
गौंओं को ये माता कहने,
इनका पालन धर्म कहाने।
चन्दन समिधा निलधृत डाले,
आग जलाकर यज्ञ चलाने,
भोजन को जब घृत नहीं मिलता,
नब भी उसको आग में डालते।
आयुर्वेद चिकित्सा इनकी,
बहुत पुरानी काम न देती,
भाषा इनकी संस्कृत होती
उसमें ज्ञान विज्ञान होते।
वैदिक लौकिक प्राकृत पाली,
सब मृत होती निश्चेतन है
पाचक शालाओं की होती,
प्रांती भाषाएं भारत की।
हिन्दी भाषा बाजारों की,
उसको पढकर समय गंवाने,
जानि रही है बहुशन इनमें,
वैर चिरन्तन दोष रहा है।

❖ ❖

''सभ्यता'' (पश्चिमी)

गोरे कहते दुनियां भर को
सभ्य बनाना ध्येये हमारा
सभ्य बनाने मांस खिलाया,
मद्यपिलाय होश गंवाया।
ढोंग दिखाने नाच सिखाया,
नंगा नाच सिखाया करते,
आंगल पढना, शान बढाना,
पैंट पर घूमना चलना फिरना,
ये सब भ्रम है, छल है, ढोंग है,
हिन्दी पंडित आँगल के बिन्दु,
लिखना कठिन समझ रहे है।
जितना आँगल शब्द मिलाये,
हिन्दी लिख लें गौरव उतना,
परेदशी के वैतालिक गण,
शिक्षा संस्थाओं में भरने।
रामायण की शिक्षा देने,
संस्थाओं में स्थान नहीं है,
उपनिषदों की सच्ची शिक्षा
संस्थाओं में मिल न सकेगी।
भारत गण की मूल्यच्युति से,
भारत मुनिजन व्यथित हुए थे,
मुनियों ने यों विनय किया था
परम पिता से जगदधिपति से।
विनता सुतोपरि, वीरासने लसन्
नानाचराचराचार्याय ते नमः
नीलारविन्द विलोचनः शौरे।

नील नीरदृश्यामः नारायणः हरे।
त्रेतायुग में तुमने भू भार का हरण करने,
मानवारातियों को उन्मूलन कर दिया था,
द्वापरांत में तुमने दृष्ट भूपालकों को,
भारनाहव द्वारा निर्मूल कर दिया था,
पून भारताधीश श्वेताधिपत्य को
गोरे निशाचराराते मिटा दोगे।
मुनियों ने यों विनय किया था
मानों सुरगण मुदित हुए थे,
भारत भुविकी पीर मिटाने,
फिर से शिबिको भेज दिया था।
उत्तर पश्चिम भारत भुवि में
विश्रुत गुर्जर देश बसा है
षउ्रितुओं की परम कृपा से
सब कहीं द्रुमदल फल धरते है
हरित वनों में लघु–लघु नदियां,
झलमल करती लुकछिप बहती,
निर्मल जल से परिपूरिन वे
हरिजन हृदय समान रही है।
कर्षक, कर्मठ, कर्मोन्मुख थे।
करकौशल से खेत सजाने,
नित प्रति बहुविध विभव बढने,
सबविधि उन्नसि पानी जनना।
वारान्निधि की तुंग तरंगें,
प्रतिफल धोती निशिदिन पद को,
युग युग से वह देख रहा था
मानवता को मंगल दाता।
द्वापर युग में द्वारावनि में,

दीन दयाल विराज रहे थे,
कलियुग में भी प्रकट हुए थे,
पोरबंदर में यनिवट बापू।
मोहन दास करमचन्द गांधी
ईसावर्ष अठाहरा सौ के,
उनहत्तर में अक्तूबर दो,
पूत सुदामापुरि में प्रगट,
मोहन पतितोद्धारक गांधी।
मातृपिता थे सज्जन सबविधि,
सत्यपरायण सद्गुण राशी,
सत्य सनातन धर्म निभाये,
उत्तम शुद्ध गृहस्थ बने थे।
जिससे मोहित जग है उसका,
बालक मोहन दास बना है,
उससे मोहन दास कहाते,
नाम चिरन्तन सार्थक रहता।
कर्मपटुत्व सदापि रहा है,
कर्मचन्द्र का नाम जुटा है,
गांधी विश्रुत नाम जुट जो,
निज कलुका वरदान रहा है।
बापूजी भी दुनियां कहती,
महात्मा भी सज्जन कहते,
आधानंगा फकीर कहने,
दुर्जन शासक दृष्ट दुरात्मा।
सब धर्मों के साधन थे वे,
सतत पहुंच रहे थे घर में,
निस्तुल निरुपम निष्कल निखधि
सतसंगी मुनि जुटते घर में।

जिन मुनि जिनमन निर्गुण साधू,
सगुणोपासक, वैष्णव योगी,
शैव सनातन बहुविध धर्मी,
सत्संगी यति शिक्षा देने।
श्रावस्ती के श्रमण पधारे,
शौद्धोदनिकृत धर्म सिखाते,
शिप्रातहके शैव महामुनि,
सर्व चराचर शिवमय कहते।
शाक्तेय रहे श्वेताम्बर थे,
श्रीयुत मिशिहा धर्मी मौलवि,
शिव शिव कितने जुटे हुए थे
बापू का घर पून बनाने।
मोहन बालक सबकी सेवा,
सबविधि विनय समन्वित करते,
सार्थक उनके वचनामृत का,
सार निरन्तर सेवन करते।
दुर्जन संगत बालक नजते,
सत्संगी से मिलते जुलते,
मानो मञ्जु मराल तजै जल–
पान करै पथ प्यास बुझाते।
धरणी तल का तिमिर मिटाने,
ध्रुवतारे का उदय हुआ था,
धिक्कृन मर्दिन पीडित जग को,
धीरज देनें प्रभुवर निकले।
देशी शिक्षा पूर्ण हुई थी,
उन्नत शिक्षा की धुन लगती,
पितृजन गुरुजन मिलकर बोले,
आँगल शिक्षा कालोचित है।
नियम विचक्षण बनकर राजे,

उन्नत पद में बालक अपना,
नियम हमारे मनुओं के जो
स्मृतियां होनी बहुत पुरानी।
मनु की स्मृतियां आदि विधाना,
पाराशर्य विशाल रहा है,
नारद की स्मृति भगर्ति प्रधाना
प्रह्लाद स्मृति चिर सुन्दर है।
ये सब वैदिक धर्म पर चलने
इन पर कान न देने कोई,
रूमी यूनानी नियमों की
मर्मत वार के पढ़कर पढ़ाने।
तो भी आँगल देश चलें कि
वही निश्चय का मातृपिता का
परेदशों का सैर–सपाटा
खाना पीना मिलजुल रहना–
परधर्मों पर विश्वास करना,
भारत भुवि की रीति नहीं थी,
आँगल भोजन अभिषमय है,
आचारों में अड़चन होगी।
ऐसी चर्चा बहुविध चलती,
ग्रामीणों के परिवारों में,
इतने में एक बुढ़िया निकली,
पाकशाला मे घुस जाती।
मोहनदास की मां के कान में,
गुन गुन करके बान सुनाती,
जो मैं कहती पुतली बाई,
याद रखोगी प्राण सहेली।
"सुन लो गोरिन आँगल देशी,
चतुर सभी में चरित विहीना,

आँखिन नें वे जाल बिठायें,
शायद लरिका बिगड पड़ेगा"
"कबागधि बोले पिता बापूजी के,
युवा पुत्र मेरा गुणों का सितारा,
कुसंगी सताते रहे बाल्य काल में,
सुसंगी जनों की कृपा से बचा है।
सदा सत्यनिष्ठा व दीनानुकरपा,
अहिंसा अनासक्त चिन्ता वितृष्णा,
इन्हीं सद्गुणों को बढ़ाता रहा सर्व–
संताप हरता बनेगा घराके।"

दोहा–माता के चरननि छुए आयसु लेने जाय,
बापू खड़े शान्तमना, शीश झुकाय झुकाय।

चौपाई–मातृवाक्य–

सुनहुंतात बीनति हमारी, करहु सोचि यदि तब हितकारी
नजहुँमाँस मधु परनियकामा, रटहु रामसिय सुमधुरना
भरत भूमि यह निरुपम गात्री, धरम, करम तप ज्ञान विद्या
अशन पान श्रम शयन सगाई, चलन, मिलन, कुलकानि मिताई
नियम, नीति, नय, विनय सुहाई, विमल रीति हम रख चति
योग, योग, तप, राग, विरागा, जनम, मरण, हित, अहित नियोग
परम चारिफल, जीवन ध्येया, राजनीति चहुँरण धिधि न्याय
समर, शांति अरु विग्रह ज्ञाना, परम धाम, जड़ चेतन, नाजा।
कृत युग से चिर विमल विधाएं, कलितक निर्बाह पुरख चलि
इनमें विचलित मन तुम भाई, धर्म सनातन मगहि सुहाई।
निखिल भुवनभवसिन्धु किनारे चिवन भरन पोन भुविरा
अनत नहीं यह निरुपम लीला, युगकृत करम नितान्त निराला
राम सीय पद् प्रतिपल ध्योवा, मन महँ सतत निरख तुम पाई
परिहरि कोप, ताप अकुलाई, करहु विजय जग पर तुम भाई।

❖ ❖

कस्तूरबा का विनय

दोहा— बा के पहि बापू चले विदालेन के काज,
जौं आँखिन वे चहुँभई, कमल कुमुद मिलि राज।

चौपाई—सुनहु प्राणप्रिय विनय हमारा, अनय छमिय निय सहज विचारा।
लघुवय व्याह मोहि तुम लाये, हित अनहित कछु जान के पायी।
खेलत हँसत हँसावत बीते, नट खट बचपन काल सुभीते।
योवन उवपन महँ घुस पाये, सुमशर क्रूर शरासन ल्गाते।
हृदय गगन महँ रंग चढाये, समय देखि हिय द्वारिसिधाये।
जलधि पार चढि नावहि जायें, अवधि नाव चढि जीवहि जीवें।
विधिकृत विरह सिखावन हारा, विमल प्रेम रस अनुभव न्यारा।
ओट्टन तुल्लल—

❖

बम्बई

धीरज धरकर बापू निकले,
सत्वर बम्बई नगर पहुँचे
पश्चिम तटकी विश्रुत नगरी,
शूरसेन से शासित नगरी।
वारान्निधि की तुंग तरंगें,
प्रतिपल पग पर चुम्बन करती,
बहुशत धवल नगाधिप जैसे
सौध खड़े हैं बिखरे पुर में।
धरणी तल को कम्पित करके,
द्रुत गति संकट मिले फिर छूटें,
संकटों की वे विकट ध्वनियां

हृदय विदारक कर्ण कठोरा।
वायव वाहन गीधों जैसे,
नभको कम्पित करते घूमते,

❖ ❖

समुद्री यात्रा

बम्बई के शुभ दर्शन करके
बापू बन्दरगाह पहुंचे
छोटे कतिपथ मोटे बहुविध
जलयानों के झुण्ड खड़े थे।
अपने अपने कौमी झण्डे,
यानों पर थे ताण्डव करते,
जापानी ध्वज अरुणोदय का,
उडगण अंकित चीनी झण्डा।
नील व लाल व श्वेत सुवर्गी।
आँगल देशी सभ्यता का
उडगण चित्रित नीली पहिया
अमरीकी ध्वज रान रहा था।
हँसिया साथ हथौडा अंकित,
रूसी रक्तपताका चमका,
स्वास्तिक चित्रित जर्मन ध्वज था,
प्रति लोमात्मक शोभा बिखरा।
भारत का तब झंडा था नहीं,
पर शासित था देश हमारा
पर शासित का शान कहाँ है ?
मान कहां अंभिमान कहां है ?

अम्बर की प्रति छवि जल में रजनविभा चमकाती
मानो जल थल मिल जुलकर एकाकार बने थे।
बापू का यह अनुभव पहला,
जल यात्रा का शिक्षाप्रद था
देशाटन का लाभ उठाये,
बापू आशय विनियम करते।
इतने में इक बुढ़िया निकली,
कहने लगती अकथ कहानी,
हामी भर के सुनने लगते,
बापू नरवर विनय प्रतीका।

शैली बदली–

अम्बुधि का बंधन समय सुनिश्चित था तब बापू,
लन्दन के पोत पर बैठे कुशल सुखी थे।
पोताधिप मुखरित करता उत्कट शंख ध्वनि को,
मानो रण कूच किया था वारान्निधि से नर ने।
हुंकृत कर तुंग तरंगें बढती पोत डुबाने,
सन्तन भुज दण्ड उठाये पोतपर थप थप मारने।
लडभिडकर द्रुत गति से जब पोत बढ़ा तब जल में,
दिनकर निज प्रतिदिन कृत्य निभाकर विरत हुए थे।
पश्चिम गिरि मंदिर मुकुट छटा से दिङ्मुख चमके,
दिग्गज निज मस्तक पर जिमि काञ्चन कुम्भ सजाने।
स्वस्त्ययन सुनाते थे द्विज पितृपति मधवा वन्हीं,
विश्वेश्वरि दर्शन देती शीत निशीधिनि सुमुखी।
उडगण लघुपरियां नगमें आँख मिचौनी करती,
लघुझषकुल जल में डुबुकी दै दै उठला करते।

❖ ❖

बापू लन्दन में

ऐसी अद्भुत लन्दन नगरी,
देखत बापू चकित बने थे,
जलयानों के दलमिल जल में,
अभिनव नगर सजाते रहते।
इसके धौम नलों से निकली,
धूम लताएं चित्रित नभ को,
घर घर वैद्यृत दीप निशा में
मानों भू पर उडगण उतरे।
पथिक निकेतन, मधुशालाएं,
वित्तनिकेतन कवल खाने,
उद्धत मद्यप सुध बुध खाये,
डग मग होते गिरते मग में।
बोध मिटा अभिमान मिटा था
परगृह घुसकर थप्पड़ खाने,
निज पर बोध मिटा था उससे
पटुनर विकट बिगाड़ किये थे।
लघुनालों की चडियों में
साहब गहरी नींद समाने,
जाग पड़े तो दायें बायें,
चितवन कर के पथ तय करते।
नौका मत्सर थेमस में था,
उभय नटों में उत्सव मेला,
रम्योद्यान सुविस्तृत जो थे
उनमें निशिदिन सुमशर लीला।
धौनाम्बर घर धनिक विराजे,
निजनिज शुनक समेत रथों पर,

निर्धन शीतल रितु से बचने
ढग बन बंदी गृह में घुसने।
धनिक जनों के शुनक सुखी थे,
निर्धन गति बिनु गलियां छाने
गोरे रंग पर गर्वित रहते,
श्याम नरों की निन्दा करते।
बापू के घर–परिवारों में
मित्रों का लधुमंडल जमना,
अपने–अपने अनुभव पर वे
प्रमुदिन कुशल सुनाते हँसते।
उनमें भोला माधव साधू
अपने अनुभव कहने लगते,
श्रोता गण निज कान लगाये,
सुनते चिन्तित होते हँसते।

❖ ❖

अंग्रेजी सभ्यता की चाह

लन्दन पुर से परिचित साथी,
उपदेशों को बरस रहे थे,
आमिष भोजन सामाजिक है,
उसको खाकर खत्रु बनोगे,
नटन विशारद आमिष भोजी,
लत्तीन पंडित वाद्यविज्ञानी,
भाषणपटु पट बढियाधारी,
लन्दन पुर में सभ्यक कहने,
यदि हो विद्वानमण्डलियों में,

मांग पर हाथ लगाते रहना,
अंगुलियों पर चुम्बन करना,
लक्षण उत्तम सभ्य नरों के।
खाद्यगृह में भोजन बढिया,
अज, गज, खग मृग सब मिलते हैं,
निज निज रुचि के अनुसृत खाये,
भाषण दीन दयापर दे दें।
भाषण सुनकर उदर गुफा में,
जीवन मचाने विप्लव नाना,
प्रकृति नटी की परहध्वनि वह
समझ सकेंगे यतिगण जग में।
शन शन रुपये खर्चकर खाने,
भूख न मिटती प्यास न बुझती,
घर की रोटी दलिया खाये,
भूख मिटाकर सोने बापू।
लन्दन पुर का धनमद शायद।
सन्दर्शक पर निर्भर होगा,
पट्टण भोजन तजकर बापू
स्वाश्रयशील बढ़ाने लगते।
प्यानो सहित पहुंची नर्तकी
लत्तीन शिक्षण साथ पहुंचे,
एक, दो, तीन, चार गिनकर रखने
पग टकराने गिरने बापू।
लम्बे पदयुग रखने पुनरपि,
डग मग पग पुनि लड़ते गिरते,
बोले बापू बहुत हुआ जी
नृत्य हमारा काम नहीं है।
प्यानो सहित चली थी नर्तकी,

लत्तीन पंडित साथ चला था,
सबसे विरत हुए थे बापू
गीता पढ़ने साँझ सवेरे।
पश्चिमियों की चाल–चलन का
बोध हुआ था जागे बापू,
ज्ञान हुआ कि उन्हें अब सब ये
धन व्यय करके समय गँवाना
मन महँ नव नव भाव खिले थे
शिक्षा इक ही ध्येय बना था
बैरिस्टर बन नश्वर बापू
भारत भुवि में लौट चले थे।
विगत राग विवर्जित मोह थे,
विदित बांधव विश्वविशाल के
विगत वैभव भारत का नया
विमल विग्रह विश्रुत बापूजी।

● ●

दूसरा अध्याय

अफ्रीका में बापू

अरब समुच्चय उत्तर सीमा
प्राच्य दिशा में भारत जलनिधि
उत्तर–पश्चिम कोण सहारा–
मरुथल विस्तृत विदिन धरा में,
पुरनी–दक्षिण कोने में बहु–
व्यापक विमल विाट तरागा।
जहां कहीं समतल पर्वत कहीं कहीं,
निन्नोन्नत गिरि गहवर वनभुवि,
श्यामल कीचड़ गहरी जिसमें,
नील सरोरुह हँसे झूमने।
शैवालों में जल घोड़ों के,
दल बल मुंह खोल तैर रहे थे,
उन पर सिनबक संकुल चढने
अश्वारोही बनकर निकले।
पश्चिम–मध्यम प्रांत जहां बहु–
विस्तृत घोर महावन रहता,
विभवों का वह भण्डार घर था,
अभय निकेतन पशु कुल का था।
हर्म क्षादि मृगों का गजन,
शार्दलों का लडना–भिडना,
तरु निकरों में लतिकाओं की,
शीतल श्यामल कोमल छाया।
अभ्य निरन्तर मिलता था वहां,
खग को मृग को नर संकुल को,
प्रकृति नहीं का लीला स्थल जहां

वन देवी का विपलब सेरा।
लगभग बारह रात कों,
उत्तर दक्षिण भेद बढ़ा था,
अपने मन को विपुल बनाने,
अरबों ने रण कूच किया था।
दीख पड़े तो मारे जाते,
पकड़े जाये निजवश रखने,
जान बचाने नीग्रो जनजति,
दक्षिण की ओर भाग चले थे।
उनमें कतिपय समता पाये,
विलयित होकर मिलहुल रहते,
उनके मान वशान बदे लघु—
नृपपद का भी दान मिला था।
यह तो बात पुरानी रहती,
उससे अपना काम नहीं है,
अफ्रीका की जनता की यह
पहली चीख पुकार रही थी।
संदर्श बन सदियों पहले,
पश्चिम देशी दलबल निकले,
लड़ने भिड़ने अनुनय करने,
अफ्रीका को हड़प लिया था।
जिन निज भुज बल अनुरात्त गोरे,
विभाजन करके धाक जमाये,
विभाजन में जब विषम हुआ था,
आपस में कटु वैर बढ़ा था।
घोर महारण फूट पड़े थे,
लाखों मानव खेल रहे थे,
व्रणित कई रात रोगी दुगुने,

आवारों की दुष्कर गिनती।
अफ्रीका की कालोनियों को,
विश्व महारण फूट पड़े थे,
जहां–जहां ढग मिल लूट लगाते,
धन विभाजन में वैर बढ़ेगा।
आँगल दल ने हड़प लिया था,
दक्षिण समतल अफ्रीका का,
आयस कवचित शकट पहुँचे,
हथियारों के ढेर लगे थे।
तोपों के दल कानन पथ में,
अजगर जैसे रेंग रहे थे,
आग उगलते भीति जगाते,
गरज कर बढ़ते नर, पशु मरते।
तांडव पीडन शोषण पटुतर–
मोषण प्रतिदिन कृत्य रहे थे,
जहां कहीं गोरे दीखपडे तो
आदि निवासी छिपते वन में।
जाल बिछाकर पकडे जाते,
अमरीका में बचे जाते,
व्रणित कहीं यदि खपडे तो,
कीचडियों में फेंके जाते।
घर में मग में चौराहों में,
जर्जर गलित शवों की ढेरी
श्वान सियार विहंगम मिलते,
भोजन करते शोर मचाते।
नन्हे नन्हे बदन नंगे,
छौने तड़पकर मरते सड़ते,
तरु निकरों से जलकरण झरते,

मानो छगजल छिटक रहे थे।
भगवान सविता कातरता से,
छिपते वन में देख न सकते,
पर्यावरण विनष्ट हुआ था,
दुर्गन्धित थी श्याम धरित्री।
जहां कहीं भारत श्रमिक पहुंचे,
द्रुत गति प्रगति सुनिश्चय जानो।
मलय द्वीपसमुच्चय में वे
श्रमिक पहुक्रचे प्रगति हुई थी
मोरी प्यस की प्रगति हुई थी
फीजी विकसित पथ में बढ़ती।
लंका में वे श्रमिक पहुँचे,
प्रगति सभीविधि पाती रहती,
बर्मा जावा सब कहीं इनके
कर कौशल की छाप लगी है।
श्रमिक जनों के पीछे पड़ते
भारत के कुछ वणिक चले थे,
उनको देखा देखी निरवधि
स्तर के भारत जनगण पहुँचे।
वणिक द्वय के बीच कदाचित्
क्रयविक्रय में विषम बढ़ा था,
बात गयी तब न्यायालय में,
माँग बढ़ी थी नियमग्यों की।
आमंत्रण को पाये बापू,
अफ्रीका में झहुनि पहुँचे,
अवलोकन कर तब बापू ने,
गतिविधियों को समझ लिया था।
आँगल शासक गर्वित रहते,
असित जनों को कुचल रहे थे,

अफ्रीका के आदिनिवासी,
संतन तापानल में जलते।
नरद्वेषी किरानो के कुशासन की करामानें,
महात्मा ने भलीभाँति विलोकी थी वितृष्णा से।
निहत्थे मानवों की थी निरी हत्या सशस्त्रों से,
द्दगों नेत्रों ने तो नहीं देखा न कानों ने सुनी हो यों।
विचारा था महात्मा ने विधाता की कृपा हो तो,
जहां जहा बापू पगधरते थे,
गुप्तचरों की कटु निगरानी,
घर में मग में राजपथों में
गुफिए जमते वृकदल जिथे।
कारण के बिनु धमकी देते,
मार गिराते पीटे जाते,
बंदी गृह में डाले जाते,
भोजन तजकर अनशन रहते।
ज्यों ज्यों पंडित होते रहते,
त्यों वे धीरज धरते रहते,
काञ्चन जितना तपता रहता
उतनी चमक बढ़ेगी उसकी।
शिक्षित दीक्षित सारथियों को,
गढित किया रण मार्ग दिखाया,
मोचन का रण जारी रखने,
बापू हिन्दुस्तान पहुँचे।

● ●

तीसरा अध्याय

भारत में बापू

जागे सारे नरकुल मिले मुक्ति मोर्चा चलाने,
डूबे जो थे उख्जलाधि में ताप के पातको के,
बापू जी के सदुवचन के स्निग्ध पीयूष से वे,
मानो पाये नव जनम सा स्वाधिकाराभिलाषी।
संतापाब्धौ मगन नर को प्रेम नाव दे तू
शांतात्मा ने निजरुधिर या प्राण को दे बचाया,
चिन्ता में तू निखिल जग की प्रेरणा दे सकते तो,
द्वंद्वातीना विमल धरणी शान्ति सम्प्राप्त होगी।

● ●

चौथा अध्याय

खादी

बोले बापू भाई बहनों
खादी वसन बनाकर पहनो
उससे अपना मोचन होगा
धन का मन का मान व शान का।
सामाजिक तप के बिनु देशी
मोचन पाना कठिन रहा है
आर्थिक शोषण ध्येय रहा है,
सित नर कुल का विदित धरा में।
सबके सब हम चरखा लें तो,
भारत ग्राम समुन्नत होंगे,
परदेशी के शोषण नथ का
अंत करेगी खादी सुन लो।
देशीपूंजी पतियों पर भी,
खादी शासन कर बैठेगी,
हिन्दुस्तान की अर्थव्यवस्था,
खादी पर ही निर्भर होगी।
बेकारी को दूर करेगी,
भेदविचार हटाती होगी,
श्रम से धन की निर्मिति करके
आर्थिक शक्ति बढ़ाती खादी।
सात्विक बुद्धि बढ़ाने वाली,
राजस तामस दूर करेगी,
खादी केवल वसन नहीं है,
ग्रामीणों के श्रम की पटुता।

नंगे भूखे ग्राम निवासी,
खादी से ही भूख मिटाते,
जिसके घर में चरखा गूंजे,
उसके घर में द्ररिद्र है नहीं।
सब यंत्रों का पुरखा चरखा,
कलियुग में भी आश्रयदाता,
उसका आदर करने वाले,
सुख से जीवन यात्रा करते।
लोभ मोह बिनु वित्त जुटायें,
कोप पाप बिन विनिमय कर लें,
काम राग धन लोलुपसा बिनु,
शांत श्रमिक श्रम से सुख पायें।
गंगा की जलधारा जैसी
शहरों की धन राशि बहेगी,
देहातों में दुर्बल जनता,
पनप सकेगी सुख पायेगी।

❖ ❖

विदेशी बहिष्करण

बापू कहते सुनिये कृपया,
वाणिभ अभिनव शोषण होता,
आर्थिक शोषण ध्यय रहा है,
सित नर कुल की शासन विधि का,
शोषक वणिक व शासक बनते,
राहु व केतु मिले जिमि नभ में,

भारत भर के विभवों को वे
कौड़ी बदले करगन करते।
उनके रूप व भाव बदलते,
बढ़िया कहकर बचे रहे हैं,
सच्चा व्यापार वह है जिसमें,
उभ्य दलों में समता होगी।
इनकी वाणिभ नीति अनीती,
उससे बचना ध्येय हमारा,
यदि हम उसमें बाधा डालें
तो वे अपने आप चलेंगे।
परदेशों में निर्मित वस्तु,

❖ ❖

हरिजनोद्धार

बापू कहते हरिजन अपने,
सन्तत सहचर प्राण सखा है.
पुनरपि कहते गिरिजन अपने,
पुरखे वन के पहरेदार है।
निशित शिलीमुख चापलिये वे,
गिरि शिखरों पर विचरण करते,
वन्यमृगों के सञ्चय से बिन्दु,
डर के मिलते जुलते रहते।
गिरिजन बनकर त्रिपुरांतकने,
पार्थ को पाशुपदास्त्र दिया था,
गिरिवट तनया, गिरिजन रमणी

प्रमधाधिप की कामिनि भामिनि।
गिरिजा सुत था षण्मुख उसने,
व्याहा हरिजन रमणी मणि को,
गिरिजन वीर खटोत्कच जिसने
भारत रण में योग दिया था।
शबरी गिरिजन रमणी जिसने,
मार्ग दिखाया दशरथ सुत को,
उसने दिव्यद्दगों से देखा,
लंकापुर में जनक सुता को।
उसके मधुर फलों को चखकर,
राम लखन अतिमुदित हुए थे।
ऐसे हरिजन–गिरिजन निन्दा,
सभ्य नरों को उचित नहीं है।
पर्णकुटी में गिरि गहवर में,
यदपि निवास कर जीते नर वे,
तदपि रहे हैं जन जीवन से,
सन्नत मेल–मिलाप निभाते
परम प्रतापी राणा नृप के
साथ रहे थे गिरिजन रण में,
शिवजी के रण कौशल से भी
परिचित गिरिजन साथ रहे थे।
नरपति वीर पषश्शीने जब
घोर महा रण कूच किया था,
हरिजन चाप शेरों से सज्जित,
आँगल दल पर टूट पड़े थे।
उत्तम नर वर भारत भुवि के
रक्षक हरिजन गिरिजन कुलका
अभ्युत्थान न जब तक होगा

भारत मोचन पूर्ण न होगा।
हरिजन सुख से वञ्चित रहते,
गिरिजन पीड़ित शोषित रहते,
उनकी उन्नति ध्येय बनाओ,
उन्नत मानव धर्म निभाओ।

❖ ❖

हिन्दी

कहते बापू "भाई बहनों",
हिन्दी पढ़कर ज्ञान बढ़ाओ,
उत्तम वैदिक कुल की बिटिया,
हिन्दुस्तान की बन्धुर गात्री।"
मध्ये विन्ध्य हिमालय उसका
भुवन मनोहर भवन बसा है,
उसका चिन्तन लेखन, भाषण,
जनम मरण का दुरित मिटाना।
चन्द महाकवि वीराग्रणि ने,
उसको रूप व़ भाव दिये थे,
अग्निकुलोद्भव क्षत्रिय की
निस्तुल वीर कथा सुनवायी।
कन्या निज लघु मृदुल करों से,
रेत जुटां कर खेल रही तो
कानों में थी गूँज रही उन
कुलवधुओं की अमर कहानी।
पर पुरुषों से रिपुदल बल से,

लाज बचाने चरित निभाने,
अग्निरथों पर सुरपुर निकलीं,
रमणी मणियाँ रजन लताएँ।
प्रलय घटा से भीषण रण में,
विद्युल्लनिका जैसी चमकी,
वीर रसामृत बरसा करके,
पुलकित करती राज सुतो को।
धरणीसुर वर तुलसी में था,
राम कथामृत पान कराया,
ज्ञान बढ़ा नव तेज भरी थी,
मर्यादा भी समसझ सकी थी।
सूर द्विजोत्तम कवि पुंगव ने,
मुरलीधर का चरित्र सुनाया,
प्रेम पयोनिधि की लहरों में
तन्मय होकर तैर सकी थी।
केशवने नव रीति बनाई
भूषण ने रण नीति सिखायी
संतकबीर व रैदास मिलकर,
आत्मज्ञान सिखाने लगते।
गिरिधर की प्रिय वादिनि मीरा
वीणा रव से मुग्ध बनाती,
उत्तम कवि पर लेखक निजनिज,
कितने वाङ्मय कुसुम चढ़ाते।
सखियां बहुविध रहती उसकी
प्राकृत अवधि मराठी मागधि,
उड़िया ब्राचड बर्बर पुरबी,
व्रजनन्दिनि पुष्तू पुनर सभी।
ये सब मि़लकर आँख मिचौनी
निशि दिन करती विधु बालाएँ,

भारत मां के आँगन को ये
मुखरिन करती कल कल रव से।
अभिनव कविवर जयशंकरजी,
मैथिल कोकिल पंत निराला,
वर्मा रामकुमार महामनि,
रमणी रत्न सुभद्रा चौहान।
दिनकर राम नरेश त्रिपाठी,
भारत शशि वर वीर त्रिवेदी,
सिंह अधोध्या ज्ञानपयोनिधि,
गुरुवर शुक्ल महागुण राशी।
इनसे लालित पोषित हिन्दी,
भाषाओं की देवकुमारी,
सोने की वह डोरी जिससे,
भाषाएँ सब बांधी जाती।
बापू ने जिस सर्वोदय का,
पाठ पढ़ाया ज्ञान बढ़ाया,
दिनप्रति बढ़ती निरूमय गात्री,
निखिल भुवन महँ दुति बरसानी।
उसकी भृकुटि लता यद्दिचढनी,
आँगल डर से लुक छिप जाते,
मंद हँसी यदि बिखेर सकी तो
शांति सनातन खिलती जग में।
मंच सजा अब नाटक जग का,
जहां वह अभिनय विविध दिखाती,
कलियुग में सब सज्जन देखे
नव भारत की वरदात्री को।
अनवद्य बादान्त सार स्वर सरिने,
श्रुतिमाथुरि बरसाओ मधुराधर पुट से,

बिरुदावलि यदि गायें तो सतत निहारी,
नर लोक बिहारी तुम सुर राजकुमारी।
अनवद्य बादान्त सार स्वर सरिने,
नव काञ्चन मणि मंडित वर नुपूर बांधे,
सित पंकज पद से नव स्वर राग बहाते,
छल चञ्चन झन झन झन मनि मोहन धुनि से
मुखरित कर जन मन को निशिवासर माये।

❖ ❖

मद्यवर्जन

उत्तम नर वर बापू कहते,
मद्यप जग में निन्दित रहते,
तजदो मद्यपिपासा मन से,
विषमय मारक मादक मधु को।
मद्यप सुधितज मर्कट जैसे,
उद्यम तजकर विकट बनेंगे,
यद्यपि उनका रूप नरों का,
मद्य तथापि छिपाता गुण को।
घर में मग में गलियों में भी,
गिरते प्रतिपग लड़ते फिरते,
निज पर बोध मिटाये मद्यप,
माँ बहनों की सोच तजेंगे,
मद्यप शासक राज्य मिटाते,
जन मन को भी मलिन बनाते,

शासक घट भर मद्य पीये तो,
शसित मधु में डूब मरेंगे।
मद्यप का घर कलह बसेरा,
चूल्हे में लघु चुहियां बसती,
नंगे फिरते पशुओं जैसे,
मान व मानवता है।
मधु के वशगत हत्या करते,
निज परिजन की मातृपिता की,

❖ ❖

शिक्षा

उत्तम गुणनिधि बापू कहते,
अनपढ़ न काम के सत्याग्रह में,
शिक्षा वह है मानव जिससे,
स्वस्थ, विज्ञानी सभ्य बनेंगे।
अनपढ़ रहे हैं शत शत लाख जो,
देहातों में कानन भुवि में,
प्राकृत रीति–रिवाज निभाये,
पशुओं संग बसेरा उनका।
उनको शिक्षित दीक्षित करके,
उत्तम भारत पुत्र बनायें,
विद्याा से जो वञ्चित रहते,
सच्चा मोचन उनका समझो।
क्यों मैं कहता बहुविध ज्यादा,
विश्व हमारा विद्यालय है,

आँखों में जो आँख रखे वे,
दर्शक जानते मर्मधरा का।
यों चिन्तित थे नरवर बापू,
हिन्दी प्रचरण करने लगते,
जहां कहीं बापू पग धरते वहां,
हिन्दी प्रचरण प्रचुर बना था।
अनपढ़ अशिक्षित दुर्बल पीड़ित,
जो जन शत शत लाख रहे है,
उनका अभ्युत्थान निभाने,
सेवाग्राम बनाया प्रभु ने।
हिन्दी प्रचरण खादी निर्मिति,
नाना विधि के धंधों द्वारा
बेकारी को दूर हटाये,
अक्षर दान दिया करते थे।
हिन्दी माध्यम शिक्षा पद्धति,
सबसे उत्तम कालोचित थी,
जन जन में यह नत्य तरीका,
सुलभ बना जन जाग पड़े थे।
ढाई अक्षर हिन्दी पढ़कर,
कबिरा उन्न्त संत बने थे,
बाल्मीकी दुभव सिद्ध बने थे,
ऐसी महिमा अनंत नहीं है।
इसको तजकर आँगल पढ़ते,
बढ़िय्या कहते गर्वित रह्ते,
माता को निज तजकर कितने
पर नारी के दास बने है।
मक्खी एचनी गोथन से नव–
रतु न पय को चख न सकेगी,
वैसे कतिपय आँगल प्रेमी,

मूल्यच्युति के पात्र बने है।
पुण्याश्रम में सेवक गण को,
नवनव शिक्षा दी जाती थी,
साँझ सबेरे स्तुति गीतों से,
मुखरित रहता पुण्याश्रम था।
अनपढ़ बने थे पण्डित उसमें
दुर्बल सबल ढगी सतवादी,

पांचवा अध्याय

संगठन

आँसू सदापि प्रिय है चिर दुःखियों को
यों कातरा भरत भूमि शताब्दियों से,
मां की पुकार सुन वीर नरोत्तमों ने,
सोचा कि दें हृदय की एधिराप्बुधारा।
ज्ञानी, व्रती, श्रमिक , कर्षक कर्मचारी,
छौने, नयोजन, पुरोहित मुरुध साधू, (मुक्त)
मानी, धनी नृप वरेण्य पदाधिकारी,
नाना स्तरीय जनता दल में पहुँची।
आँगल सज्जन ह्यूम महाशय,
उत्तम भारत मित्र रहे थे,
उनसे स्थापित काँग्रेस द्वारा,
मोचन पथ अतिविपुल हुआ था।.
पंकिल कीचडियों में पंकज,
उगते बढ़ते गंध बहाते,
आँगल में भी सज्जन रहते,
मंगल दाता सत्पथ गामी।
सत्याधिष्ठित संस्था वह थी,
निस्तुल सबविधि विश्रुत जग में,
सेवा व्रत में तत्पर जनतनि,
दल दल में नित भरते लगती।
सेवाव्रत था धागा उससे,
मानव रतन पिरोये जाने,
भूषण एक नवीन धरी थी,
भारत माँ नित मंगल गात्री।

कर्मक, कर्मठ, वणिक धनी थे,
शिक्षक शिक्षित, नियम नियन्ता,
नाना स्तर के मानव त्यागी,
संस्था में नित जुटते रहते।
जन हृदयों में सत्याग्रह की,
छवि भरते थे निशिदिन बापू,
उद्‌बोधन से जनगण जागे,
तन मन धन तज रण भुवि निकले।
गोपाल कृष्ण जी गोखले विश्रुत—
ज्ञानी महारथी मंच पर आगये,
क्रोधाभि भूत पर संयमी दक्ष थे,
श्वाताधिपत्य को ललकारते रहे।
बाल गंधाधर त्यागी तिलक जी,
लाल में मान्य थे विज्ञान वारिधि,
श्वेताधित्य के घोरान्त कार को,
बालार्क बिम्बसा उच्चाड़ने लगे।
जीवराज मेहता विख्यात कीर्ति थे,
भावाभि भूत बन भारतोद्वार में।
रुसतमे में हिन्द थे रुसतम महाबली,
अस्त भय युद्ध में अग्रसर बन गये।
विद्याधिराज थे मालवीय प्रभु,
मध्यान्ह मार्ताण्ड जैसे विराजते,
विद्याभिवृद्धि पर ध्यान देते हुए,
उद्यमी युद्ध की विद्या सिखा रहे।
राजर्षिताण्डव निकल पड़े भीष्मवत्,
राजते थे युद्ध भूमि की भूवि थे।
ओज से सैन्य को साजते थे मह्म—
राजयोगी विराजे थे प्रजापति।

बाबू रवीन्द्र नाथ ठाकुर बृहस्पति,
विश्व में शान्ति का संदेश वाह थे,
स्वाधीन देश की चातकी को,
स्वाति नक्षत्र से ज्ञान पीयूष बरसते।
चित्तरञ्जन दास विकाश तुल्य सब,
वृत्तियां त्याग कर युद्धोद्यमी बने।
मत्तमसंग से विध्वंस कर श्वेत—
पत्तियों को पराभूत करते चले।
लजपथ राय जी लाला महाबली,
उग्र प्रतिज्ञा निभाते रहे कभी,
संगराध्यक्ष हो क्रोधी महारथी,
अग्रेसरों में विराजे महामति।
चक्रवर्ती राज गोपाल आचार्य,
विक्रमी व्यूह को सम्पन्न कर रहे।
राजेन्द्र बाबू सदा सत्य धर्मादि,
पालते जूझने मैदान में चलचे।
सीमाधिवासी महाकाय रणदक्ष,
अब्दुल गफूरखाँ पहुँचे महार थी।
उग्र प्रतापी महामना मोतीलाल,
अग्रदूतों में विराजते थे सदा।
विख्यात से घोर झंझा मचा रहे।
भूलाभाई देशाइं शील मर्यादादि,
पालते सेवकों को चलाते रहे।
देवी सरोजनी नांयडू कोकिला,
भारतोद्याान की मधुप्रास चन्द्रिका।
गान पीयूष से उद्वेग सदे पराभूत
लोगों को जगाती रही सदा।
आचार्य भावे विनोबा दृढव्रती,

आगमान्तस्थित ज्ञानधारा बहा,
त्याग के बीज को सब कहीं बो रहे,
भोग सब छोड़कर लोग बढ़ने लगे।
सिस्टर निवोदिता आनी बसन्त जी,
कस्तूरी बा भी निकल पड़ी जग में।
कैलास नाथ जी कटज् महाव्रती,
शैलाधिराज से शोभायमान थे।
गोविन्द पंत जी पाण्डित्य से,
बुरे पंथियों को सही पंथी बना रहे।
अब्दुल कलाम जी आजाद सर्वोच्च,
सत्य का आकार, सत्याग्रही बने।
संग्राम मार्ग को सम्पन्न कर बिना,
संकोच के चले त्यागी दृढ़व्रती।
सम्पूर्ण आनंद दाता महामति,
सम्पन्न कर रहे संग्राम लक्ष्य को।
श्वेताधिपता के विषवृक्ष को बिना,
शस्त्र के निर्मूल करने झपड पड़े।
वीराग्रणी महादेवजी देशाई,
श्वेतान्ध कार में चन्द्रसा बन गये।
जाकिर हुसैन दयावारिधि दैत्य की,
वाहिनी को पराभूत करते चले।
सुब्रह्मण्य महाकवि भारति,
सर्वाराध्य पहुँचे अगुआ,
सरदार पटेल बर्दोली के,
गरज कर निकले समरांगन में।
गीखनचारी केसरिमानो,
श्वेत मृगोंपर टूट पड़े थे,
मेषदलों पर लकड़बग्घा,

मानों झपड़कर भय उपजाना।
पंडित नेहरू परम प्रतापी,
झुण्ड़ लिये निज साथ पहुँचे,
मण्डित करने जनमंडल को,
दण्ड़ सभी के दूर हटाते।
दादाभाई नरौजी थे,
दानव दलका परमवि रोधी,
दारिद्र पीड़ित जन सञ्चय को,
देने नव नव बोधन रण का।
नरिमन कुशल महागुण राशी,
गरज कर निकले समर भुमि में,
गरुड़ समाज प्रताप सुधा से,
गोरे गरल मिटाने लगते।
मागध कर्षक व्रजभूषण जी,
विजय पिपास् जाग पड़े थे,
निजकाम काज तजे थे सबके,
हित को सार्थक करने निकले।
श्रीयुत श्रद्धानंद तपस्वी,
अमर शही दबने रण में,
उनका चिन्तन करना अपना,
धर्म रहा यों कहना सुनिये।
राजकुमारी अमृत कौर औ,
राजकुमारजी शुकल नरोत्तम,
भारत भूषण मालव्या अरु,

❖ ❖

चम्पारन (मगध)

प्रभु! राम! तुम्हीं अब साथ रहो, चिर संचित संकट दूर करो
श्रीराम तुम्हीं नित साथ रहो परतंत्र हमारा दूर करो। प्रभु राम.......
तन, मन, जान निहारे है—प्रभु,
मातृ, पिता, गुरु, बंधु तुम्ही,
पतित जनों का त्राणन प्रण—प्रभु,
अगति हमें तुम सतत रखो। प्रभु राम..........
हिन्द हमें मकरंद रहा,
हरिचन्दन सा सुगंदित है,
परतंत्र हटे स्वयं तंत्र म्लि,
अब मंत्र हमें प्रभु 'राम' रहा। प्रभु राम.........
द्वंद्व बढ़ा हम चञ्चल है प्रभु,
वञ्चित है, सित संकुल से,
अन्तक रिपुज्यों ध्वंस करो कि—
चिन्तन शांति खिले जग में। प्रभु राम........
उत्तम नृप मुकुट महामणि निस्तुल शासन विधि से,
वद्धित यश धवल विभा से नाम अशेक अनोखा।
अमराप्सर विद्याधर गण तुष्ट हुए थे दिव में,
कहते यों "देवानांप्रिय" मागध परम प्रतापी।
साम्राज्यों की उन्नति अवनति,
उदयास्तमय समान रही है,
उस पर चिन्तन सन्नत करके,
उन्नत अनुभव प्राप्त करेंगे।
जब नंदों के अवनति काल में,
मौर्य नृपों ने उन्नति पायी,
उनके यश की रजत विभा से,

आलोकित था देश हमारा।
हिन्दुस्तान के अक्ष्य धन का,
परदेशों को बोध हुआ था,
उत्तर पश्चिम द्वार खुले थे,
उद्वत शठ दल झपड़ पड़े थे।
हूण व शक दल लुकछिप निकले,
ह्येय ननिर्दय रण कौशल से,
हेम व रतन धन हड़प चले थे,
हिंसक पशु ज्यों मृग शावक को।
मृगचर्मों के वसन धरे थे,
मान या राज या मानवता नहीं,
मनुष्याकृति मन पशुओं का था,
मानव कहना कठिन रहा था।
मठ मंदिर सब तोड़े जाते,
गलियों में आग लगायी जाती,
आश्रम वासी मारे जाते,
सखियाँ अपमानित की जाती।
ग्रंथ गृहों में आग लगी ज्यों,
विन्ध्याचल में दावानल था,
खलिहानों को आग लगाते,
आतंक मचाते थे जन जन में।
हत्या करना लूट लगाना,
सत्य व धर्म का मर्म बताने,
धर्म व कर्म व जाति बदलना,
सुरपुर का नव मार्ग बताते।
अत्याचारी हत्यारों की,
कुत्सित कृत्य सदापि चली थी,
शोषण अन्तिम ध्येय रहा था,

परदारामह परधन हारी।
गोर निवासी गोरी निकला,
गीधों का दल मानों झपटा,
दशकों तक का समर चला था,
देशी नृपगण विघटित रहते।
गजनवी निज बहु सैनिक लेकर,
लूट लगाने निकल पड़ा था,
जो कुछ सामने दीख पड़े थे,
वे सब हड़प कर भाग चला था।
तुर्कों के दल झपट पड़े थे,
पारसियों ने लूट लगाया,
अफगानों ने लाभ उठाये,
अरबों को भी लाभ हुआ था।
धार्मिकता का पहनावा था,
आर्थिक शोषण ध्येय रहा था,
जो कुछ शेष रहा था उन पर,
गोरों की भी दृष्टि पड़ी थी।
पुर्तगालों ने राह दिखायी,
पीछे फ्रेंच व आँगल निकले,
सबके पीछे आँगल पर वे,
मेघाबल में सब से आगे।
अतलान्तिक के मछुए बैठे,
हिन्दुस्तान के सिहांसन में।
घर के मालिक पतित बनें तो,
झूठे साधू बिटिया के पति,
तस्कर रक्षक भण्डार घर के,
भिक्षुक उत्तम सज्जन भाञ्जा।
भवन सराय सलोना परिवार,
आवारे बन छाने गलियाँ,

पूजागृह में श्वान व चूहे,
राजे उपमा भारत की थी।
गोरों का शासन था नहीं भीषण शोषण विधि की,
ज्वाला या विषपादप कटु गरल उगलता रहता।
तट तरु की छाया में ज्यों गीध छिपे शव खाते,
नियमों की शीतलता में सुख से शोषण करते।
चम्पारन नील रुहों का पालना था युग युग से,
उससे था जीवन वृत्त किसानों का रचजाता।
खेतों में नीलरुहोकुर उगने छवि भरते थे,
कर्षल के मानव तट में आशा हंस चहकते।
बिटिया का व्याह किसी की चिन्ता में चमका तो,
दूसरे का भव्य विचार चिरन्तन तीर्थाटन में।
तीसरे के मन में बेटा इकलौता था उस वेग,
सर्वोत्तम शिक्षा देकर उत्तम पुरुष बनाये।
ऐसी बहु चिन्तासर में डूब रहे कर्षक तो,
तीन कठिया ओले पड़ते आशांकुर दहजाने।
व्रजभूषण मागध कर्षक बापू के पहिं पहुँचे,
विनयानत होकर बोले "कार्षिक जीवन बिगड़ा।
एक ओर थी तीन कठिया की रीति कुरीति सताती,
दूसरी ओर जनहित कुचला जाना सर्कार द्वारा।
नियमों की जंजीरों से जकड़ी जाती जनता,
दुरितार्णव लहरों में जब डूब रहे प्रभु सुनिए"
उसने यो चम्पारन का चित्र रचा दिखलया,
उसके साथ झहुति पहुँचे चम्पारन में बापू।
प्रभु ने की जाँच समझे गतिविधि कृषको की,
स्वस्त्ययन समर्पित करते थे द्विज मंगल दाता।
सत्य है जग में नित्य सौख्य का रास्ता जीवन–
मुक्त है देशप्रेमी आर्नरक्षक भी होंगे,

शुद्ध चेतना तभी हत्कमल में खिलती,
भक्ति भाव से मोचन मर्त्य जा सकते होंगे।
(यह सन्नकवि पाट्टणत्तु पिल्लै की तमिल भाषा की काव्य शैली है। यह गाने योग्य है—ने ञ्चरिविलक्कम)

❖ ❖

रणनीति

जगदोद्धारक बापू अपने
भारत रण की नीति सुनाते,
नरवीरों ने नतमस्तक हो
रण कौशल के पाठ सुने थे।
"हिन्दुस्तान के भाई बहिनों,
अपने रण की नीति सुनोगे,
तीसरा रण यह भारत भुविका,
उसकी अपजय हो न सकेगी।
सत्य सतीत्व बनाये रखने,
प्रभु रामने रण कूच किया था,
दूसरा जो था भारत उससे,
धर्म बचा था द्वापर युग में।
कलि में नीति हमारी बदली,
हिंसा तजकर युद्ध करेंगे,
सत्य हमारा शस्त्र रहेगा,
उसकी अपजय हो न सकेगी।
उसकी साधना हो न सकेगी।
उसकी साधना यदि करना तो,

उन्नत सत्य निभाना होगा,
जिसमें उन्नत सत्य रहेगा,
शत्रु नहीं वह मित्र हमारा।
शासन के कर चार जिन्हें,
धन, सैन्य, विधान सहयोग कहेंगे,
उन्हें यदि हम छेद सकें तो,
शासक निष्क्रिय निष्प्रभ होंगे,
पहला कर है धन जिसको वे,
करके द्वारा सञ्चित करते,
छेदो उसको कर बंदी की,
पैनी छुरि से अलग करोगे।
दूसरा कर है सैनिक आवेग,
कवच बनाये शासक रखते,
जनवाहिनि की बाढ़ बढ़े तो,
सेना उसमें डूब मरेगी।
सैनिक वहां निज शस्त्र उठाते,
जहां नर हत्या निर्मम चलती,
हिंसा तजकर मेघा बल के,
रण में सैनिक निष्प्रम होंगे।
सैनिक का काम दण्ड विधान है,
उस पर सोच विचार करेंगे,
दण्ड तभी दे सकते शासक,
जब वे दण्डित परिमित रहते।
परिमिनियों को पार करोगे,
दण्डित दण्डी भेद मिटेगा,
शासक शासित भेद मिटेगा,
नव्य विधान तुम्हारा होगा।
तीसरा कर है नियम व्यवस्था,
उस पर सोच विचार करेंगे,

मेघाबल के बल पर उसका,
हल कर सकते हितकर होगा।
नियम रहे हैं द्विविध धरा में,
लिखित व अलिखित नियम कहाते,
उनमें उत्तम अलिखित रहना,
उसका रक्षण धर्म हमारा।
सत्य अहिंसा अस्तेय दया,
अपरिग्रह निस्संग सभी से,
स्वाश्रय शील व शम दम निष्ठा,
अलिखित नियम सनातन जग के।
जिस पर चलना जग यह सारा,
उसका लंघन धर्म नहीं है,
यदि नर उसका लंघन करता,
चन्द क्षणों में राष्ट्र मिटेगा।
कोटिकरों से आहुति कर लो,
देशी चिन्तन ध्यान सदा हो,
पूर्णाहुति जब अर्पित होगी,
गोरे भारत छोड़ चलेंगे।

❖ ❖

उद्योगवाद

नर वर कुलमणि बापू कहते,
"उद्योगों पर ध्यान लगाओ,
घर घर लघु लघु यंत्र सजाये,
नव नव उपज बनाते जाओ"।

नट्न भारति

भारत देश सुविस्तृत जिसमें,
थल जल विभव समृद्ध रहे हैं,
उसके जन जन श्रमिक रहे जो,
सबविधि लायक कुशल रहे हैं।
सब को यदि काम देना हो तो,
लघुयंत्रों को सजा कर उनसे,
अपनी माँग पर ध्यान लगाये,
सृजन नवीन निरन्तर कर लो।
जन जन मिलकर झुण्ड बनायें,
लघुयंत्रों से सृजन करोगे,
देशी माँग निभायें जिससे,
देश हमारा स्वाश्रित होगा।
नीड बनाती कुररी जैसे,
जाल बनेगी लघु लघु मकड़ी,
वैसे उपज नवीन बनाये,
उसका नकल न कोई करते।
बेकारी द्रुत दूर हटेगी,
अलसन नहीं रह सकते है,
कर कौशल की चमक बढ़ेगी,
उसकी महिमा अनतन होगी।

छठा अध्याय

जालियाँवाला

अद्भुतकर विद्रुमगिरिनिभ सिद्धिविनायक अपनी
उज्वल पद्कमलविभा इस जन मण्डल में बरसे।
उद्धनसित शासक दिन प्रति हत्याकाण्ड मचाते,
रक्षित हो उनसे मानव भारत पूत धरा के।
गोरों ने समझ लिया कि जनावलि जाग पड़ी तो,
रौलट के नियमों का नवजाल जंजाल बिछाये।
जालों की जंजीरों में जकड़ पड़ी जनता यो,
हिल न सकी डुल न सकी थी चीख न चिल्ला सकती।
अनमोल छबीली कारीगरि की चमक मिटाने,
उंगलियाँ उनकी काट रहे जो कारीगर थे।
नवरतन भरे जो भण्डार घर थे नृपनि गणों के,
लूट रहे उनको धमकी देकर चतुर लुटेरे।
भारत को निर्बल निष्क्रिय मूल्यच्युत करने को,
बंगाल का विभाजन करके जड़मति मुदित बने थे।
भोजन का भाव बढ़ाने नमक पर कर लगवाने,
भक्षण को नरसकर जनजन राजपथों में मरने।
उचीडिन साधक सत के सज्जन सत्पथगामी,
सह न सके सुन न सके थे सोच न सकते कोई।
बाग सजा जालियाँवाला जहां जन जन पहुँचे थे,
प्रकट हुए रोष व शोक निरीह निहत्थे जन के।
नारे से कम्पित नभ था गिरि संकुल हिलते थे,
मुखरिन थी प्रतिध्वनि चहुँदिशि चंचल भूमाता थी।
आषाढ़ घटों के जैसे क्षुभित पयोनिधि जैसे,
विस्फोटन ज्वाला मुखि के जैसे नरवर गरजे।

"रौलट के नियम निरंकुश निठुर निकाले जाये,
हिन्दुस्तान अमर रहे जय भारत माँ की जय हो।"
कुपित हुए गोरे निजबहु स्फोटक शस्त्र सजाये,
आडायर थे नेता सहित पहुँचे जालियाँवाला।
झांकों पर वृकदल गज छौनों पर केहरि जैसे,
लघु झषपर मगर व हंस दलों पर गीध सरीखे,
उरगों पर विनतासुत सुर दल पर दानव जैसे,
निर्दोष निरीह प्रजा पर निष्ठुर टूट पड़े थे।
'ओंडायर था नेता नीच निहत्थों का हत्यारा,
हत्या को युद्ध समझते उसने शस्त्र चलाये।
स्फोटन के भी करख से कान फटे जन जन के,
बिजली सी चमकी ज्वाला आँख न दीखपड़ी थी।
व्यथिता थी माताएँ मृत पुत्रों पर चिपटी थी,
कलप रही वीर कथाएँ बहुविध भावमयी थी।
विधवाएँ की जड़ सहलाती चिल्लाती,
हा नात मनोहर भैया छिन में किधर चले तू ?
लेते ही क्यों न चला तू मुझ अभागिन को भी ?
लेते ही क्यों न चला तू मुझ अभागिन को भी ?
खोलो मुँह अवगुन मेरे छमिय जरा निरखो तो।
छौने है तेरे जैसे नटखट चीख चिल्लाते,
केहि भाँति समझा दूं इन नादानों को कह दो।
साध्वी का रोदन जल नहीं सह सकती यह धरणी,
द्दगजल था कारण पाञ्चाली का भारत रण का।
दिङ्मुख थे विकल व व्रणित विवर्ण हुए थे उसकी
प्रति छवि थी दीखपड़ी उस रंगीन मोहित नद में।
परछायी बहुतों की थी दीखपड़ी उस नद में,
गोरों की निठुराई के जो जन रसद बने थे।
रेड इन्डियन नादानों की परछाई चमकी थी,
अफ्रीकी श्याम नरों की परछाई भय देती।

बंगाल की तंग गुफा में जितने निधन हुए थे,
उनकी भी भीनिद प्रति छवि नाच रही उस नद में।
कल बल से छल से खल के जितने मृतक बने थे,
उनके प्रतिबिम्ब भयानक दीखपड़े थे भाई।
मिट्टी के रंग व ढंग जभी बदलेंगे जग में,
पुतलों का रंग तभी परिवर्तित निश्चय जानो।
मानव के रक्षक कहते गोरे बाँक पुकारते,
मलिन मना समझ रहे यह जग है गूंगा बहिरा।
युग.युग तक सुन ले नरकुल नरहत्या की गाथा,
पढ़ले अरु याद रखें परतंत्र भयानक जग में।
संतों के संतानों का त्याग न व्यर्थ हुआ था,
उससे सुलगी थी धधकी परिवर्तन की ज्वाला।
जय जानकिनाथाजनार्दन जनिमृति दायक शौरे।
मत मारुति सेवित मरतक मणिनिभ पाहि नमस्ते।
वर नीलसरोरुह पूत पदों पर तन मन अर्पित करने,
पर तंत्र हटा दो तापत्रय का मलिन मिटा दो
कुम्भोद् भव जम्भाराति मुख्यामर वन्दित पदको,
सन्तत हम चिन्तित हो ध्रुव शांति सनातन साधें।
जय जानकिनाथाजनार्दन जनिमृति दायक शौरे।

❖ ❖

चौरीचौरा

हत्याकाण्डमचाये गोरे
स्वस्थ सुरक्षित भवन पहुँचे
सत्यछिपाने जग से बहुविध

मिथ्यावाद प्रकाशित करते।
जिनका निधन हुआ था उनका,
सन्नत सहचर व्यथित हुए थे,
बंधु जनो पर चिन्तित जनता,
हंत पहुँची चौरी चौरा।
सत्याग्रह को ध्येय बनाये
सत्पथ गामी लाख पहुँचे,
हत्यारों से बदला लेने,
उद्धत सेवक लक्षाधि थे।
नाना प्रांत व ग्रामनिवासी,
नाना वेषविधान सजाये,
मानवता का की शान बचाने,
तनमन धन तज रण भुवि निकले।
पाटो सहित पहुँची थनियाँ,
कंकड़ सहित पहुँची बिटियाँ,
छुरियों सहित पहुँची छलियाँ।
वंग कलिंग व कोंकण दल थे,
तुंग तरंगों जैसे गरजे,
आँगल दल का गरब मिटाने,
शंका रहित पहुँच चुके थे
मंच सजा जो सन्नत उसमें
सेनानायक राज रहे थे,
हत्यारों की निन्दा सबविधि
भीषण भाषण देने लगते।
नेतागण को कैद बनाने,
गोरे सैनिक उछल पड़े थे,
सेवक गण के साथ जनावलि,
टूट पड़ी थी गतिविधि बदली।

बिजली जैसी बात पहुँची
घर घर में जनसंचय जागे,
जनवाहिनि थी बहने लगती,
जन सागर था चौरी चौरा।
गलियों में या चौराहों में,
गोरे साहब दीख पड़े तो,
लात पर लात लगायी जाती,
कूपों में भी फेंके जाते।
शत शत थाले जलने लगते।
थानेदार भी मारे जाते,
कनल खाने उनाय जले,
मधुशालाएं ढहती रहती।
गोहत्यारे गोचर होतो,
मर्मत निश्चय किस्मत बढ़िया।
हत्या निष्फल सिद्ध हुई तो
गोरे साहब छिपने लगते।
बंदूकों को तजकर बहादुर
तरुओं पर भी चढ़कर छिपते,
पुल के नीचे वन–बागों में,
पीपों में या गिरि गह्वर में,
छिपकर जान बचाते गोरे,
दर्शक हाहाकार मचाते।
ज्यों शशदल को चीते चीरते
बकुल दलों को बाज कुचलते
वैसे आँगल दल को जनता,
खींच खसीट कर नोच रही थी।
आहत गोरे कातरता से,
शिबिरों की ओर सरक रहे थे,
उनके रुदन पर दुःखित बापू,

कहने लगते सेवक गण से।
"हिन्दुस्तान के भाई बहिनों,
हिंसा उत्तम मार्ग नहीं है,
सत्याग्रह का मरम सुनाता
कान लगाकर सुनिए कृपया।
हिंसा का फल प्रतिहिंसा है,
उससे अपना काम न होगा,
प्रतिहिंसा के कोपानल में,
ध्येय सभी का बिगड़ पड़ेगा।
मेघाबल के संगर का नाम,
सत्याग्रह है सुनिए कृपया,
जिसमें अविरल मेघाबल है,
अलिम विजय उसकी होगी।
मानव से नहीं वैर रहेगा,
दुश्चरितों से लड़ना पड़ता,
उसका कारण जड़ता नर की,
जड़ता मन का सहज रहा है।
तप से मन को शुद्ध करोगे,
सत्य खिलेगा द्वति भरदेगा,
सबमें तेरी प्रतिछवि होगी,
शत्रुत्व मित्र समान बनेंगे।
गोरों के इन दुश्चरितों से
लड़ते हैं हम मेघाबल से,
नर हत्या से नर की उन्नति
कर नहीं सकते कोई जग में।
अपने तप से पर के मन को,
शुद्ध बनाना धर्म हमारा,
उनके मन में सत्य खिले तो,
शत्रु नहीं वे मित्र हमारे।

सत्याग्रह का शस्त्र हमारा,
निस्तुल जग में विश्वविजेता,
सबके हित की रक्षा करने,
सत्याग्रह का शस्त्र उठाओ।
कुत्सित स्वार्थ निभाने कोई,
सत्याग्रह का शस्त्र न लोगे,
उसको स्वार्थ निभाने,
सत्याग्रह नहीं अत्याग्रह है।
मैं निज मन को शुद्ध बनाने,
अनशन व्रत में लग जाता हूं,
जब तक हिंसा बंद न होगी,
तब तक हड़ताल स्थगित रहेगी।
ऐसी शिक्षा देने बापू
अनशन तप में दीक्षा लेने,
तत्क्षण हड़ताल बंद हुआ था,
शांत हुआ था चौरी चौरा।

❖ ❖

झंझा

बतलाता जालियाँवाला आँगल दुश्चरितों को
दिखलाता चौरीचौरा प्रतिहिंसा की ज्वाला।
बर्दोली कहती रहती विजय कथा कृषकों की,
अब सुनिये झंझा का विकराल भयानक खको।
लाहौर के काँग्रेस का जो अधिवेशन था उसमें,
उत्तम नरवीरों ने की अग्रप्रतिज्ञा सुनिये।

पंडित जी परम प्रतापी नेहरु अग्रासन में,
अन्यस भी नेतागण भी साथ विराज रहे थे।
आह्वान हुआ था संगर व्यापक सत्याग्रह का,
निर्देश यथाविधि सबको देने थे जननेता।
"तो सुनिये भाई बहिनो देश पुरातन अपना,
शतकों का लीलास्थल यह परम पवित्र हमारा,
मोचित हो तन मन धन तज अब का धर्म यही है।
परिजन निज विरहानल में जलकर राख बने हो,
प्रतिपग रिपु मारक शस्त्र समेत हमें ललकारें,
तजसकते सहचर हमको रणभुवि विमुख बने हो,
संगर में पीठ दिखाना काम है का पुरुषों का।
इस पथ में कितने पुरखे अमर शहीद बने जो,
हड्डी के टुकड़े उनके ढेर पर ढेर लगे है,
उनमें लुकु छिपकर मृत्यु हमें नित भीत बनाये
संगर में पीछे मुड़ना कायरता है भाई।
मोचन का पथ यह कण्टक पूर्ण जहाँ पर सुनिये,
खूँखार वृक रिपुदन छिपकर मौका ताक रहे हैं,
नियमों के जाल बिछाये आखेटक ज्यों छिपते,
जकड़ पड़े यदि तो हत्या, मृत्यु, चिरन्तन पीड़ा।
अंधियारे बंदीगृह में बंदी बनकर तडपें,
सन्तत निज जान बचाने अन्तक से लड़ना हो,
सत्पथ में दृढ़ता से भय रहित बढ़ें हम भाई,
तन मन धन प्राण समर्पित करके मोचन पाये।
गरज रहें तोपे शार्यद छिन्न बनें जड़ अपनी,
अलक की परछाई पग पग पर भीनि जगायें,
दुरित भरी रुधिर नदी को तैर कर पार उतारे,
इह पर गति करतल में हो रोक न सकते कोई।
मृत्युञ्जय तब तक अपने परम पिता रमि मैया,

उत्कट द्दग गात सदागति तनय रहे नित साथी,
उद्धत सित शासक तब तक विजय न पा सकते है,
वर्द्धिन बल वीर्य पराक्रम सहित बदें जय पायें''।
नेता के उद्बोधन से मुदित हुए जनगण थे,
चिरचिन्तित चाल पर मिलजुल चलते अविकल गति से।
शिक्षित यों सेवक दल बल निज निज प्रांत पहुँचे,
व्यापक हो संगर जिससे सब विधि सफल बनायें।
उत्तर में संचालक थे नेता पंडित नेहरू,
दक्षिण के प्रांत समुच्चय देख रहे राजाजी,
पश्चिम में पटेल भाई संचालक रहते थे,
पूर्वोत्तर भाग पर राजन बाबू सेवक नेता।
बल्लभ जी पंत महारथ शिखिर सखि विराजे,
भारत का मध्यविभाग सुरक्षित सबविधि उनसे।
पाँचों पर अंकुश निज रखते थे यनिवर बापू,
गोरों के आन व शान व मान मिले मिट्टी में,
गरब घटा कपट मिटा धन मद का धूर्त हटा था।
उदय हुआ बोध न जानते थे कि किया क्या जाये,
दुविधा में पड़कर शासक गण थे चिन्तित रहते।
लक्षाधिक सुरमंदिर थे खुलते झाँकी चमकी,
दीपजले स्वागत था सब हरिजन–गिरिजन कुल का।
युग युग से वञ्चित ये जन दर्शन का सुख पाये,
नाच उठे गाते थे स्तुति कीर्तन भाव विभोर थे।
अछूत न थे यदि हो तो वे जो परदेशी थे,
मतभेद मिटा था यदि था तो वह शास्त्रार्था में।
विघटन का वाद मिटा था यदि था तो वह उनमें,
जिनका मन परदेशों में पग भारत में रखते।
अद्भुत थी रण की पटुता विजय रथी यनिष्ट की,
सत्याग्रह उत्तम तप की रीतिरिवाज निराली।

चर पहुँचे लन्दन उनसे सम्राट समझ चुके थे,
विप्लव की लपटें भड़क उठी है हिन्दुस्तान में।

❖ ❖

मंत्रणा

सजग हुआ महल, पहुँचे सचिव सभी बैठक थी,
चर्चा थी भारत की यह क्रांति दबायें कैसे ?
प्रस्तुत थे सक्षम सचिव सभी उस गूढ सभा में,
प्रश्न किया सम्राट ने "क्या चलता हिन्दुस्तान में ?"
कह दो चर इतना विप्लव किसके श्रम से चलता ?
बतला दो सत्य न छिपना दिल्लीपति करता क्या ?
नियमों का पालन करता है कि नहीं वह कह दो ?
चाह रहे क्या वे हमसे कौन है नेता उनके ?"
"सुनिए तो कृपया भारत जनता जाग पड़ी है,
प्रभु सत्ता माँग रहे वे एकात्मक है दृढ़ है।
करते वे सत्याग्रह और अस्सहयोग, न जानते,
मतलब क्या ? भाषा तक हम समझ न पाते कोई।
नेता है गाधी तूती उसकी बोल रही है,
तर्जनी पर उसकी नाच रही है भारत जनता,
नियमों का लंघन कर की बंदी, नमक निकालना,
स्वेच्छा से जेलखानों को भरना नित का वोई।
शासन की बाग फटी, हम बिगड़े, रथ निश्चल है,
दिल्लीपति प्रमुख रथी दुविधा में, कातरता में।
"बंदीगृह हैं नहीं क्या ? वहां दण्ड विधान नहीं क्या ?
फाँसी पर क्यों न चढ़ा सकते इन दुर्मतियों को ?"

"कहते वे स्वेच्छाचारी बंदीगृह परुदीसा,
हथकडिया काञ्चन कंकण फाँसी कल्पक माला,
सागर है लीलाकुण्ड सनातन सत है साक्षी,
अंतक है सन्तत सहचर संगर जीवन लीला"
"विघटन की नीति चलाई क्यों नहीं उनमें जिनकी,
जाति रही सहस कई अरु धर्म कई शत रहते ?
देशी नृप रहते शत शत भाषाएँ भी रहती,
आपस का वैर बढ़ाना उनमें सरल नहीं क्यों ?
विघटित कर राज्य चलाना पुरखों का चिरनय है,
उस पथ से विचलित हो तुम क्यों भयभीत बने हो ?
उत्तर के प्रांतों में वह नीति सही फल मिलता,
धर्मों के नाम पर झगड़ा सतत चलाते रहते।
भाषा पर जात पर फूट पड़ी पर प्रबल नहीं है,
कहते वे ये सब अपने घर की बात रही है।
देशी नृप कतिपय सत्याग्रह में हाथ बँटाते,
अपर रहे निश्चल निजनिज स्वार्थ पर अडिग रहे हैं।
हत्या से बंदीगृह से ताछन पीडन विधि से,
सत्याग्रह मोर्चे पर कुछ असर न पड़ता सुनिए,
अपने जन कतिपय उनके साथ मिले है उससे,
टिकना हो यदि कुछ आन उपाय विचार करेंगे।"
"तो कह दो, आज उपाय तुम्ही निज अनुभव ज्ञान से,
सुन लूँ वह स्वीकृत, जिससे शासन सुदृढ़ बनायें"।
"सद्भाव निभायें शायद सम्भाषण के द्वारा,
अपना मत स्वीकृत हों तो विजय हमारी होगी।
गांधी यहाँ आमंत्रित हों सादर राजमहल में,
समझ सकें उभय मतों को जिसमें उलझन सुलझें।"
सम्राट ने न्योता भेज दिया था चरके द्वारा,
बापू को गोल मेज स्वीकृत थी वे लन्दन पहुँचे।

मित्रों के सहित निरीक्षण करते लगते बापू,
लन्दन पुर की जब प्रगति कहाँ तक पहुँच गयी थी ?
जो था वह पहले अब नहीं उन्नति पर वह चढ़ता,
यंत्रों के ढेर पर ढेर लगे वे चहुँ दिशि चमके।

❖ ❖

गोलमेज

उत्तम मित्र समेत महात्मा,
सत्तम लन्दन नगर पहुँचे,
पद्धति मध्ये निरख रहे है,
विस्तृत पुर की वद्धित महिमा।
यंत्र विधान विशाल वहां पर–
तंत्र किसी को अनुभव था नहीं,
मंत्र विमुग्ध रही ज्यों चिन्ता,
यान्त्रिक युग का मान्त्रिक पुर क्या ?
उसका राज रहा था सब कहीं,
जिसके बिनु काम काम न चलते,
सब कहीं चमक दिखाता वह जो,
सर्वाधीश्वर पश्चिमियों का।
जोत रहा वह खेत कहीं कहीं,
कूट रहा वह सड़क जहां कहीं,
काट रहा है चीर रहा है
नोट बनाकर ढेर लगाता।
स्नान कराता पाचक करता,
दान किसी का लेता भी नहीं,

धोता सीना दुहता बुनता,
''कहिए कृपया श्रीमन गांधी,
हिन्दुस्तान की गतिविधि कैसी ?''
''जैसे आपने समझ रखा है
वैसी गतिविधि हिन्दुस्तान की''
''सन्न सरीखे दुबले पतले,
पूरे वसन न भर पेट भखते,
इतना सरल व ललित रहे क्यों ?
नेता भारत कहिए कृपया।''
''मैं हूँ सेवक उनका जो है,
भूखे नंगे वह पीड़ित है,
इतना भी प्रति शीर्ष न होगा,
आय जिसे मैं व्यय कर पाऊँ।''
''सुनता हूँ आप नियम न मानते,
देते कर नहीं, नमक निकालते,
सत्ता के प्रति वैर बढ़ाते,
नागरिकों में भ्रम उपजाते।''
उन नियमों को मानते है जो,
अनलिख युग युग से वहां चलते,
सत्य, अहिंसा, अस्तेय दया,
अपरिग्रह निस्सग सभी में,
श्रुविवचनों पर विश्वास पुनरपि,
स्वाश्रयशील बढ़ते रहना,
स्वार्थ बिना परमार्थ निभाना,
अभ्युत्थान सभी का करना,
जिनसे जनता कुचली जाती,
जिनसे लोग फँलाये जाते,
जिनका ध्येय न जनहित होता,

उन नियमों का लंघन करते।''
करके द्वारा संचित धन से,
करदाता का श्रेय न होना,
परदेशों का कोश बढ़ाने,
कर नहीं देते नर मेघावी।
नमक रहा है सस्ता तब भी,
उस पर बर्द्धित कर लगवाते,
सागर का वरदान रहा जो
उसको लेना हक हमारा।''
न्योता मैंने भेजा आपको,
कारण उसका सुनिये कृपया,
भारत शासन सुदृढ़ बनाने,
आपका योग प्रदान करें क्या ?''
चाह हमारी प्रभुस चाहै,
उसको पाना ध्येय हमारा,
यदि आप कृपया भारत छोड़ें,
सुदृढ़ बनेगा देश हमारा।
''आपको यदि हम मोचित कर लें,
शासन का क्रम कैसे होंगे ?
गण शासन या एकाधिप या
सैनिक शासन ग्गीकृत होगा ?''
''मोचित भारत गण शासन से,
सुदृढव सक्षम होगा सुनिए,
अभ्युत्थान सभी का करने,
विश्व कुटुम्ब विधान करेंगे।
सर्वोदय नव राष्ट्रधरा में,
सर्व हितों का रक्षक होगा,
अपने पुरखे नर वीरों का,

मन है वसुधा कुटुम्ब रहेगी''।
''यदि कहीं रिपुदल झपड़ पड़ें तो,
सत्याग्रह से सामना हो क्या ?
सापुध संगर फूट पड़े तो,
सद्वचनों से रक्षित हों क्या ?''
''मोहाकुल रिपु रोगी रहता,
उसको उत्तम शस्त्र चिकित्सा,
सत्याग्रह के समर पथ में,
शस्त्र चिकित्सा वर्ज्य नहीं है।''
''गण शासन के दायित्वों से,
परिचित है नहीं भारत जनता,
नृप शासन से परिचित जो है,
उनका मोचन खतरा होगा।''
''लिक्ष्वावी में गण शासन था,
बहुमत शासन वैशाली में,
चिर परिचित हम गण शासन से
उत्कंठा की बात नहीं है।''
चर्चा यों थी उभय दलों में
अंतिम निर्णय हो नहीं नाय,
निश्चित समय टला तब दो,
विरन हुए थे सम्भाषण से,
बोले सम्राट श्रीमन गांध,
धन्य हमारा सम्भाषण था,
लन्दन पुरमें स्वागत आपका
पुनरपि होगा, यात्रा शुभ हो।

● ●

सातवां अध्याय

भारत छोड़ो आंदोलन

प्रभु मेरे नृत्य विधान तिहारे विपुल निराला,
उड़ते जो रजकण उससे विश्व अनेक प्रकटने,
हिलते जब गगन जड़ातन झरती सुर सरिताएँ,
पदयुग के ताल सरीखे स्पंदन जीवन जगत का,
विधुरविद्दग निशिदिन वैश्वानर छवि बुद्धि सभी की,
अहिकुल प्रभुसत्ता बाल शशांक किरीट निहारे,
ऐसे प्रभु मेरे मानव पट में सतत विराजें,
जिसे यह भारत मोचन गाथा सफल बने हों।
उन्नीस सौ वर्ष बयालीस सबविधि उत्तम अपने,
मोचन का अध्यादेश तभी निकला यनिवर का।
सम्पन्न हुआ था संसद सूर्य सुनासर सविधे,
पहुँच गये नाना प्राब्भनिवासी सेवक दल में।
बंगाल के तुंग महारथ बाईस लाख पहुँचे,
उत्कल के जन सेवक थे उससे दुगुने तिगुने।
दक्षिण के सत्पथ गामी पच्चीस लाख पहुँचे,
गुर्जर दल वीर मराठों सहित कई लाख निकले।
पंजाबी, मोटे जाट व मागध पहुँचे,
लगभग वे गिरिनिकरों से तेईस लाख रहे थे।
लिक्ष्वावी लक्षधिक थे लक्षद्वीप निवासी,
लक्षण युत दक्ष सभी विधि सहस्राधिक पहुँचे थे।
अष्टपथी श्रमण तथागत शिष्य सहस्र रहे थे,
साथ रहे सहस्रधिकवर मीमॉसक हठयोगी।
पांडे थे पंडित पादरी मौलवी मानव वादी,

शैव तथा शक्तियादि पहुँचे सहस्त्र निरालीस।
कहना क्यों ज्यादा बहुविध अगणित सेवक पहुँचे,
मानों नव दिल्ली डूब रही थी जन सागर में।
मंच जहां विस्तृत वहां यनिराज विराज रहे थे,
अन्य सभी नेतागण भी साथ विराज रहे थे।
बहुधा निज चरखो सहित पहुँचे सूत बनाने,
कतिपय लघुगीता, मानस, उपनिषदादि लिये थे।
स्वाध्याय व तप, जप, कीर्तन, चर्चा जहाँकहीं चलती,
एकात्मक भाव विभोर हो सतके साधन चमके।
विश्रम के समय सभी निज स्नानाचमन निभाये,
भोज को बैठे सेवक सज्जित भूपर सुख से।
निज निज रुचि के अनुसृत सब खाद्य पदारथ लिए थे,
गांठों को खोलकर देने लेने मिलजुल खाते।
परसे जो खाद्यपदारथ बहुविध षड्रस पुन थे,
भंखने थे उनको सेवक गण निज भूख मिटाने।
पापड़ थे सिंधी कदली फल थे नाना विधि के,
श्रीकंठ व पूडी नारंगी रस इडली चटनी।
रसगुल्ला सार ओसाण व प्रथमन माखन रोटी,
आचार व पचडी खिचड़ी दूध मलाई पेड़ा।
हलवा के साथ मुरब्बा अंगूर कटहल मीठा।
उड़द बड़ा निलगुढ घृत दधि माहिष आम की पचडी,
बहुशन विध भारत भोजन महिमा अनत न भैया।
भोजन की गंध सुगंध उड़ी थी पहुँची दिव में,
ईर्ष्या से कहने सुरगणै धिक धिक देवामृत भी।"
सबके सब खादी धवल धरे थे सिर पर टोपी,
गाते थे "रघुपति राघव" भाव विभोर बने थे।
उत्कट बल वीर्य व साहस वर्द्धित थे जन जन में,
सत्पथ में निज तन मन धन अर्पित सेवक सब थे।

संसद की तुग विराट सभा को निरखकर बापू,
उद्घोषण करते "आँगल शासक भात तज लें।
अविलाम्बित जनसंचय से प्रतिधुनियां निकली थी,
तत् क्षण ही "आँगल शासक भारत छोड़ो छोड़ो"।
सत्यव्रती सत्पुरुषोत्तम निजकर ऊपर उठाये,
बढ़ते थे आगे दिल्लीपनि को दूर भगाने।
धीरे से अविचल मोर्चा "रघुपति राघव" गाने,
दिल्ली की ओर बढ़ी थी झण्डे सब फहराते।
क्षीरोदधि क्षुभित बना या उमड़ पड़ी सुरसेना,
या झझा झकझोरता या खण्ड प्रलय मचा था ?
तैनात रहे जो आँगल सैनिक जहाँ कहीं मग में,
निष्क्रिय थे निष्प्रभ थे ज्यों अरुणोदय में जुगुनू।
बढ़ते थे चढ़ते थे जन धवल नगधिप दलज्यों,
गरज रहे निर्भयता से "आँगल भारत छोड़ो"।
हिलते थे गिरिकुल कम्पित नभ था धरती तड़पी,
प्रतिधुनि थी मुखरित चहुँदिशि दिड्मुख कलुष बजे थे।
आसेतु हिमाचल वासी जन जन सजग हुए थे,
गरज उठे घोरारव में "आँगल भारत छोड़ो"।
गिरते थे द्रुमदल जलानी गलियाँ पुल ढहते थे,
झरते थे पत्थर गोली बरसी, रुधिर बहा था।
जलते थे शकट मगों में बरसे आयस गोल,
बंद हुए गमना गमन व वार्ताविनिमर ाबके।
स्थगित हुए वाणिभ मण्डल कार्यालय कारखाने,
निश्चल थे पहरे कान न देते शासक गणेका।
सैनिक थे चञ्चल हथियार तज वे शांत खड़े थे,
सित शासक निजनिज कक्षाओं में छिपने लगते।
गोरों से शिक्षित भारत सैनिक बिगड़ पड़े थे,
निष्क्रिय थे निस्सहयोग निभाये शांत खड़े थे।

जलते थे कत्ल खाने मधुरशालाएँ दहती,
मद्यपनिज मधुपान तजकर बनने सत्पथ गामी।
आमिष तज गोरे शासक सत्य पर भूख मिटाने,
सत्याग्रह समर सबको सबका पग दिखलाना।
गोरों को देखकर बालक चुटकी दे दे पूछते,
"रे रे सेठ क्यों नहीं जाते भारत तजकर कहे दै।
हत्या या हिंसा थी नहीं शस्त्र प्रहार नहीं था,
सुध बुधबिनु गोरे साहब अपने आप डरे थे।
अद्भुत कर युद्ध छिड़ा था सबका भारत भुवि में,
उद्धत सिन शासक भय से छिपते निज निज घर में।
झाँक रहे कतिपय गोरे वातायन खोलते थे,
मानों लघु गिलहरियाँ चढ़ती है तरु निकरों में,
कतिपय निज शस्त्र छिपाये लुक छिप करते वन में,
मानों निज धार्मिक बल की च्युटिं से मुँह न दिखाते।
छिपते थे पीपों में अए पुल के नीचे बिल में,
बहुतेरे कुटियाँ सज सज तपास बनकर बैठे।
कतिपय नव नकली दाढ़ी चिपके मुँह में दौड़े,
गनिवेग बढ़ा तो दाढ़ी झरती तजकर भागते।
कूपों में छिपते कतिपय दौड़े निबिड वनों में,
बहुतों ने शस्त्र समुच्चय बेचा भूख मिटाने,
सित नर की गतिविधि बिगड़ी थिर नहीं भाग्य किसी का,
उत्थान व पतन सभी के भाग्य पर बदल कर आते।
गर्वित सित शासक निज प्रभुसत्ता रक्षित रखने,
शस्त्रों या सैनिक बल के आश्रय में रहते थे।
सतकी जो ज्वाला उज्जवल भड़क उठी धधकी थी,
शस्त्रों का मिथ्या बल था निर्बल दुर्बल निकला।
संसार के सज्जन संध पुकार कर ऊँचे स्वर में,
गरज उठे सत्याग्रह है चिर विजयी कलियुग में।

इतने में लन्दन पुर में सम्राट समझ गये थे,
उनका जुऑ टूटा गोकुल भारत मुक्त हुआ है।
(उनका जुऑ टूटा गोकुल भारत मुक्त हुआ था)

❖ ❖

चिरविजयी

"मंगल के साथ अमंगल प्रकृति नटी की लीला,
उसका यह कार्य–कलाप न जानत मानव कोई।
पुचकारती है वह अपने प्यार भरे इक कर से,
ताडन भी देती दूसरे कर से प्यारी माई।
बापू का धर्म सनातन जो था विदित धरा में,
उसका सद्भाव न समझ सके थे कतिपय हिन्दू।
चिन्तन था उनका अपने मन को उन्नत करना,
औरों की निन्दा करना अपना करतब रहता।
जग के सब धर्मों पर सम्भाव बढ़ाने बापू,
लोगों को समझाते थे सच्चा धर्म यही है।
कुपित हुए बापू से वे कट्टर पंथी हिन्दू,
मानों दिनकर को मलिन बनाता ग्रहण विषैला।
बापू जब अपने प्रतिदिन भजन निमग्न रहे थे,
हत्यारे भगतों के मित्र पहुंचे भजन सभा में।
प्राणान्तक शस्त्र प्रहार से हनन हुआ बापू का,
राम रामिनि रटते रटते बापू सुरपुर पहुंचे।
स्तब्ध हुए जड चेतन जग मानो प्रलय हुआ था,
हाहनि विलाप कलाप से मुखरित थल जल नभ थे।
तप्तहुए विरहानल में शत शत सत्पथगामी,
आत्माहुति करके बापू संग पहुंचे दिव में।

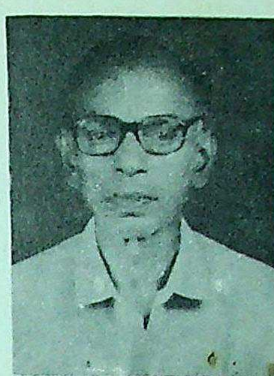
संसार के सज्जन निवह पुकारि पुकारि कर गरजे,
बलिदान अनोखा यह है निरुकल सत है साक्षी।
चिर विजयी बापू ने जड त्यागा पर वहां पहुंचे,
जहां अपना धाम चिरन्तन शांति सनातन साधे!"

❖ ❖

राष्ट्रगीत

जन गण मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता
पंजाब सिंधु गुजरात मराठा, द्राविड़ उत्कल बंग
विन्धय हिमाचल यमुना गंगा, उच्छल जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशीष मांगे,
गाहे तव जय गाथा।
जन गण मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता
जय हे! जय हे! जय हे!
जय, जय, जय, जय हे।

जय हिन्द



एन. दामोदर कुरूप ने केरल विश्वविद्यालय से हिंदी में विशेष योग्यता प्राप्त की है। 65 वर्ष की आयु में उन्होंने जीवन के 35 वर्ष विभिन्न स्तरों पर हिंदी पढ़ाने में व्यतीत किए। प्रमाणिक उपदेशक के रूप में वह केरल हिंदी प्रचार सभा के भी सदस्य हैं।

आज तक उन्होंने दो पुस्तकें लिखी हैं : हिंदी में नटन भारती और दूसरी मलयालम में। उन्होंने भारतीय साहित्य की चुनी हुई पुस्तकों का भी अनुवाद किया है जो इस प्रकार है। 1. 'संपूर्ण अवतारवाणी'—लेखक संत अवतार सिंह—मलयालम में अनुदित 2. नौ धार्मिक शास्त्र—लेखक : आचार्य नरेन्द्र भूषण मलयालम से अंग्रेजी में अनुदित 3. 'महर्षि का ऐक्यवाद'—लेखक : श्री राजेन्द्र जिज्ञासु—हिंदी से अंग्रेजी में अनूदित।

GANDHI SMRITI AND DARSHAN SAMITI

Gandhi Smriti and Darshan Samiti (GSDS) was formed in 1984 by the merger of Gandhi Darshan at Rajghat and Gandhi Smritri 5, Tees January Marg. The basic aim and objective of the Samiti is to propagate the life, mission and thoughts of Mahatma Gandhi through organising various socio-educational and cultural programes.

Gandhi Smriti

Gandhi Smriti at 5, Tees January Marg, New Delhi is now a national memorial where the epic life of the Father of the Nation ended on Friday, January 30, 1948.The hallowed house treasures many memories of the last 144 days of his life. The exhibition on the Mahatma, the room he lived in and the prayer ground where he fell a martyr with God's name on his lips attract a large number of visitors every day. The atmosphere reverberates with the *bhajan* he liked most, *Easwar, Allah, tere naam*. . . .

International Centre of Gandhian Studies

Situated closed to the Gandhi Samadhi at Rajghat, on a 36-acre land, where previously Gandhi Darshan exhibition was housed, is ***the International Centre of Gandhian Studies*** which came into being during the 125th birth anniversary of Mahatma Gandhi. The Centre is an attempt to offer research and guidance facilities to scholars from India and abroad, documentation of various peace initiatives and it seeks to provide all kinds of inputs on Gandhi and allied subjects at one place. At present the Centre provides a comprehensive exhibition on Gandhi, conference halls, camping facilities for major national and international meets & library, children's corner, photo unit and a publication division. The centre also publishes a Journal of information and ideas.